निर्मला योग

द्विमासिक | वर्ष ४ अंक २३ | जनवरी-फरवरी १९८६

ॐ त्वमेव साक्षात्, श्री कल्की साक्षात्, श्री सहस्रार स्वामिनो,
मोक्ष प्रदायिनो, माता जी, श्री निर्मला देवी नमो नमः ॥

दिव्य जीवन की ओर

कृतयुग के आगमन से अब,
नवीन इतिहास लिखते जायेंगे।
आधुनिक, प्राचीन सब,
अन्धविश्वास मिटते जायेंगे ॥१॥

परम्परायें प्राचीन अब,
पीछे छुट जायेंगे।
भेद-भाव, छल कपट के घड़े,
अब फूट जायेंगे ॥२॥

सहज सत्य के उदय से,
सब अन्धकार मिट जायेंगे।
सहजयोग के अभ्यास से,
आत्म साक्षात्कार पायेंगे ॥३॥

है भविष्य उज्ज्वल सामने,
नव निर्माण करते जायेंगे।
दिव्यता के प्रकाश में,
आगे ही बढ़ते जायेंगे ॥४॥

सत्य अहिंसा, प्रेम के हो,
अब गीत गाये जायेंगे।
मिट जायेंगे कलंक जीवन के,
अब "कल्कि अवतार" आयेंगे ॥५॥

असत्य, अधर्म, अन्याय के,
अब अन्त हो जायेंगे।
विश्व बधुत्व, एकात्मता में,
सब सन्त हो जायेंगे ॥६॥

मातृप्रेम में निरत रहेंगे,
शुभ कर्म करते जायेंगे।
साम्राज्य प्रभु का होगा धरा पर,
जीवन अनन्त पायेंगे ॥७॥

सी० एल० पटेल

卐 जय श्री माताजी 卐

गीत

उड़ रहा सुगन्ध धरा से,
गगन में छाने लगा है।
आज मुक्ति का बोध हुआ,
गीत मंगल गाने लगा है ॥१॥

अनन्त जीवन का राही,
पथ परम पर जाने लगा है।
लाँघ कर सब सीमायें,
असीम में समाने लगा है ॥२॥

सत्य का साक्षात्कार हुआ,
भ्रम-भूतों को भुलाने लगा है।
असत् से सम्बन्ध टूटा अब,
संग सत् के जाने लगा है ॥३॥

तोड़ कर तम का आवरण,
ज्योति अमर जगाने लगा है।
सत्चिदानन्द के सागर में,
गोते लगाने लगा है ॥४॥

प्रभु के साम्राज्य में प्रवेश मिला,
पद परम पाने लगा है।
परस मातृपद कमल सहज में,
जीवन सफल बनाने लगा है ॥५॥

सी० एल० पटेल

सम्पादकीय

"अवधू बेगम देस हमारा"

—श्री कबीर

निर्विचारिता की स्थिति, बिना गम अर्थात सुखद होती है।

श्री कबीर दास जी इसी स्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि हे साधू हमारे देश में अर्थात शरीर में किसी प्रकार का दुःख नहीं है।

परमपूज्य आदिशक्ति श्री माताजी जन मानस को कुण्डलिनी जागृति द्वारा यह स्थिति अनायास सुलभ करा रही हैं।

इस सन्देश को जन जन तक पहुंचाना और इस आनन्दमय स्थिति से अवगत कराना ही हमारा धर्म है।

ॐ साक्षात् परमानन्द दायिनी साक्षात् आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।

निर्मला योग

४३, बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

संस्थापक : परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर. डी. कुलकर्णी

प्रतिनिधि कनाडा : लोरी एवं कैरी हायनेक
1540, टेलर वे
वेस्ट वेन्कूवर, B.C. VIS 1N4

यू.एस.ए. श्रीमती क्रिस्टाइन पेट्रूनीया
२७०, जे स्ट्रीट, १/सी
ब्रूकलिन, न्यूयार्क-११२०१

भारत श्री एम. बी. रत्नान्नवर
१३, मेरवान मैन्सन
गंजवाला लेन,
बोरीवली (पश्चिमी),
बम्बई-४०००६२

यू.के. श्री गेविन ब्राउन
ब्राउन्स जियोलॉजिकल इन्फ़र्मेशन
सर्विस लि.,
१३४ ग्रेट पोर्टलैण्ड स्ट्रीट
लन्दन डब्लू. १ एन. ५ पी. एच.

इस अंक में ·············

	पृष्ठ
१. सम्पादकीय	... १
२. प्रतिनिधि	... २
३. परमपूज्य श्री माताजी का ६३वें जन्म दिवस पर प्रवचन	... ३
४. संक्रान्ति पूजा	... १३
५. श्री कुण्डलिनी शक्ति व श्री येशु ख्रिस्त	... १७
६. सहजयोग और शारीरिक चिकित्सा—(४)	... २८
७. वर्तमान का महत्व	... ३१
८. सहजयोग का कल्प वृक्ष	... ३२
९. दिव्य जीवन की ओर	... द्वितीय कवर
१०. त्यौहार	... तृतीय कवर
११. निर्मल माता कुण्डलिनी माता	... चतुर्थ कवर

परमपूज्य श्री माताजी का ६३वें जन्म दिवस पर प्रवचन

मुम्बई
२-४-८५

आज के 63rd Birthday (तिरेसठवें जन्म दिवस) पर आपने जो समारोह रचा है उसके लिए एक मां को क्या कहना चाहिए? क्योंकि जो कुछ भी है सब आपके लिए ही है। ये सारी उम्र भी आपके लिए है इसलिए इसके लिए यदि आप इस समारोह को मनाते हैं तो इतना ही कहना है कि यह अपनी चीज है। और इसका आपको पूरा उपयोग करना चाहिए। क्योंकि जिन्दगी बहुत महत्वपूर्ण है। आज तक परमात्मा ने अनेक लोगों को संसार में भेजा। उन्होंने भी कार्य किया है। उस कार्य की ही अब फलश्रुति हो रही है। आज उसी कार्य के आशीर्वाद स्वरूप आप लोगों ने सहजयोग पाया है। लेकिन अभी तक आप लोग शायद इसका महत्व नहीं जान पाए। पहले तो लोग पहाड़ों में घूमते थे, बहुत तपश्चर्या करते थे, परमात्मा की खोज में रहते थे।

आपने सहज में ही आज अपनी आत्मा को प्राप्त किया, इतना सहज और सरल मिला है, और उससे इतना क्षेम प्राप्त हुआ है। इस कदर आपने शक्तियों को प्राप्त किया है, उसमें कभी भी ऐसा आपको लगा नहीं कि इस चीज को मिलने में कितना प्रयत्न करना पड़ा, कितने जन्म लेने पड़े, कितनी जिन्दगियां बितानी पड़ीं, उसके बाद आज आप सहजयोग को प्राप्त हुए। और इस दशा में आए हो कि आज आप एक साधु स्वरूप हैं। बहुत लोग सोचते हैं कि सहजयोग में आने से हमारी घर की सांपत्तिक स्थिति ठीक हो गयी या हमारे बच्चे ठीक हो गये। लड़कियों की शादियां हो गयीं, लड़कों को नौकरियां मिल गयीं। हर तरह का क्षेम हो गया। यह सब देखते हुए भी, जानते हुए, आपको उन लोगों के लिए सोचना चाहिए जिन्होंने अभी तक इसमें से कुछ भी नहीं पाया है, जो अज्ञान के सागर में डूबे हुए हैं। इस पर हमेशा चर्चा होनी चाहिए, इस पर हमेशा विचार होना चाहिए। आप तो जानते हैं मुझे किसी भी चीज की जरूरत नहीं है। मैं पूरी तरह से तृप्त जीव हूँ। लेकिन मुझे सम्पूर्ण संसार को बचाना है। सारे संसार के लोगों को बचाना है। उसके लिए बहुत मेहनत करनी है। सालों बीत गए। पहले तो मेहनत की कि किस तरह से सहजयोग एक सामूहिक चेतना का कार्य करे। बहुत मेहनत की। हर-एक आदमी की ओर ध्यान देकर के और उसको अभ्यास करके और समझा कि इस आदमी के कैसे दोष हैं फिर उसका वर्गीकरण किया, अलग-अलग उसको बिठाया, फिर उसका विश्लेषण किया। हजारों लोग जो जीवन में आए, जिनके बारे में मैं पढ़ती थी, मैं जब छोटी थी हमेशा लोगों की जीवनी पढ़ती थी। स्कूल में लड़कियों को बड़ी हंसी आती थी ये अभी प्राइमरी स्कूल में है और सबकी जीवनी पढ़ती रहती है। कोई आस्ट्रेलिया में आदमी हो गया, उसकी पढ़ रहे हैं, कोई जापान में हुआ उसकी पढ़ रहे हैं, कोई अमेरिका में हुआ उसकी पढ़ रहे हैं, हमेशा हम

जीवनियां पढ़ते थे। पिछले जीवन में इसको कौन से प्रश्न आए ? इसका हल उसने कैसे निकाला ? ये आदमी कैसा होगा ? इसकी प्रकृति कैसी होगी ? फिर इसकी इस जन्म में प्रकृति क्या रहेगी ? इस प्रकार अनेक जीवनी मैं पढ़ती रहती थी। और मैं कुछ खास पढ़ती नहीं थी। मेरा मुख्य उद्देश्य था सबकी जीवनी पढ़ें। जब भी लायब्रेरी जाऊं तो जीवनी निकाली। अब मैं जानती हूँ कि मनुष्य कैसा है। उसके कितने तरीके हैं ? और उसमें क्या-क्या दोष हैं ? और जब मैं ये पढ़ने लगी और देखने लगी तब मैंने सोचा कि मैं जिस कार्य के लिए संसार में आयी हूँ वह मुश्किल न होगा। सामूहिक चेतना संसार में आनी चाहिए और लोगों की कुण्डलिनी सहज जागृत होनी चाहिए। ये कार्य मैं संसार में करके जाऊंगी। लेकिन बड़ा कठिन काम था। अब इतनी मेहनत करने के बाद आप लोग इतने पार होने के बाद आज आपके सामने जब मैं बैठी हूँ। मुझे एक प्रश्न लगता है कि आप लोगों को ये कैसे समझाया जाय कि सहजयोग कितनी महत्व-पूर्ण चीज है। ये आपके घर द्वार के संभालने की चीज नहीं है या आपके बीवी-बच्चों को संभालने की चीज नहीं है क्योंकि ये सब temporary (अस्थाई) है। आपके न जाने कितने बच्चे हो चुके, कितनी बीवियां हो चुकीं, क्या-क्या हो चुका और अब कितने political lives आपने lead (राज-नीतिक जीवन बिताए) कितना क्या-क्या किया। अब जो सबसे बड़ी चीज ये है कि इन सहजयोगियों को कैसे समझाया जाय कि ये बहुत ही महत्वपूर्ण चीज है। और संसार का कोई सा भी कार्य इससे ऊंचा नहीं है। बहुत से लोग कहते हैं सहजयोग बहुत बड़ी चीज है, बहुत से कहते हैं अब हम सहज-योग के बगैर रह नहीं सकते। कोई कहते हैं कि सहजयोग से हमको बड़ा लाभ हुआ। लेकिन अब ये कैसे समझाया जाय कि हमारे लिए तो सहजयोग ही सब कुछ है और इसका कार्य करना ही हमारा जीवन है। हमें जो नया जन्म मिला है सिर्फ सहज-योग के कार्य में संलग्न रहना, हर समय सहजयोग के बारे में सोचना है। मैं हर समय सोचती रहती हूँ अब ये जो बच्चे आए हैं जो कि हमारे यहां पैदा हुए हैं ये सब Realised souls (पार हुए लोग) हैं, बहुत तेजस्वी बच्चे हैं। अब इन बच्चों को एक स्कूल में रखना चाहिए। अब जिन मां-बाप के पास बच्चे हैं वे इसमें Interested (रुचि रखते) हैं, बाकी नहीं। नहीं तो दूसरे ऐसे लोग हैं जिनके लिए हमने कहा कि चलो हम ऐसा कुछ कार्य करें कि जहां पर हिन्दुस्तान के कला के द्वार खुलें। हम विदेश के लोगों को बुलाएं। मुझे कला से कोई मतलब नहीं है। वैसे देखा जाय तो कला तो मैं कैसे भी हो बना ही सकती हूं और चला ही सकती हूँ। लेकिन इस कला के माध्यम से हम औरों को आकर्षित कर सकते हैं, इस देश में ला सकते हैं। उनको पार कर सकते हैं। उसको महत्वपूर्ण तरीके से करना है। जिनको कला के क्षेत्र में Interest (रुचि) है वे लोग कहते हैं माँ ये आप बड़ा अच्छा काम कर रही हैं। इसकी ओर देखने की दृष्टि न तो इतनी गहन है और न विशाल। आदमी जितना गहन होगा उतना विशाल होगा।

सहजयोग व्यक्तिगत नहीं, समाज के लिए नहीं, सहजयोगी के लिए नहीं, यह तो संसार के लिए है। मैं मानती हूँ कि मेरा विचार बहुत बड़ा है। लोग कहेंगे कि माँ बहुत महत्वाकांक्षी हैं। ऐसा कैसे हो सकता है ? हो सकता है। मैं जब छोटी थी तो मैंने अपनी माँ से कहा मैं तो ऐसा चाहती हूँ माँ दुनिया के हर आदमी का परमात्मा से एका-कार हो जाय, कम से कम कुछ तो हो जाय। तो मेरी मां मुझसे कहती थी "बेटी तू अगर एक से दूसरा भी बना ले तो मैं तुमको धन्य समझूंगी।" और मेरे पति मुझसे शुरू में यही कहते थे तुम तो अबलिया हो, लेकिन तुम दूसरों को अपने जैसा बनाने का यत्न न करो। ये बड़े पत्थर लोग हैं। कोई नहीं बन सकता। तो पहलो तो हमारी स्थिति

आ गयी। पहली स्थिति में हम ठीक हैं। इस स्थिति में हम पहुँच गए कि हम सहजयोगी हैं। ये हमें विश्वास हो गया। और मां आदिशक्ति है ये भी विश्वास हो गया। इसमें कोई शंका नहीं। परन्तु इस पर दूसरी शक्ति आनी है कि सहजयोग आज एक महायोग है, और सबसे महत्व का काम है। आप देखते हैं कोई आदमी भागा जा रहा है, भागा जा रहा है, भई क्या ? मैं एक बड़ा भारी प्रॉजेक्ट बना रहा हूँ, खासकर सरकारी नौकरों को तन्खाह उतनी ही मिलती है चाहे प्रॉजेक्ट बनाओ, नहीं बनाओ। गधे हो चाहे घोड़े हो, एक ही तन्खाह मिलने वाली है। उनका कुछ बढ़ता नहीं। तो वो भी जुटे रहते हैं। भई क्यों ? काहे मरे जा रहे हो ? तुमको क्या मिलेगा ? नहीं नहीं, ये मेरा कर्तव्य है। तन्खाह तो तुमको इतनी ही मिलने वाली है। पैसे के लिए थोड़े कर रहा हूँ। मैं तो तन्खाह के लिए नहीं कर रहा हूँ। तो काहे के लिए कर रहे हो ? मैं तो कर्तव्य के लिए कर रहा हूँ। कर्तव्य क्या होता है ? तो उनका अगर कर्तव्य इतना महत्वपूर्ण है तो ये कर्तव्य कितना बड़ा है ? इस कर्तव्य को कितने महत्व से करना चाहिए ? हम हर आदमी एक महान गुरुस्वरूप हो गए, ये भी आप नहीं जानते। आप करके देख लीजिए, आप अपनी शक्ति को इस्तेमाल करके देख लीजिए कि आप हैं कि नहीं हैं। इसमें कोई अहंकार की बात नहीं, आप हैं सो हैं। इसमें काहे का अहंकार। आप हो ही गए हैं बड़े, आप हैं ही ऊंचे। लेकिन इतने ऊंचे होकर भी आप जिन चीजों को महत्व देना चाहिए उनको नहीं देते हैं। अब जो भी कार्य करें इस दृष्टि से करें कि इसका सहजयोग में फायदा हो, सहजयोग के लिए ही कर रहे हैं। और हमें कुछ करने का नहीं। अब ये समझाना बड़ा कठिन है। कुण्डलिनी जागृति आसान है। उसका बिठाना ठीक है। राक्षसों को मारना ठीक है। भूतों को भगाना ठीक है। वो तो हमारे काम ही हुए। लेकिन जो साधु सन्त हो गए, जो स्वयं ही प्रकाशमान हो गए, उनसे ये बताया जाय कि तुम्हारा प्रकाश बहुत महत्वपूर्ण है और वो उनके सर में टिक जाय। यह कैसे किया जाय ? आजकल मेरा मनन इन सब बातों पर हो रहा है कि इन सहजयोगियों में ये बात भर जाय कि इससे महत्वपूर्ण दुनिया की दूसरी कोई चीज नहीं। जितना करना था कर लिया मैंने। कोई साहब हैं कि मेरी बीवी नहीं मानती। कितनी उम्र है आपकी ? सिर्फ साठ साल की है। जिन्दगी भर उस बीवी की गुलामी की और अब भी करते रहो। अन्त में तुम्हारा क्या हाल होगा ? अगले जन्म में तुम उसकी बीवी बनोगे कि क्या होगा ? ऐसा ही लगता है। क्योंकि गुलामी तुमने की तो उसके फलस्वरूप तुमको भी तो कुछ मिलना चाहिए। आप समझ नहीं रहे हैं। इस तरह अपना समय बर्बाद करने से आप परमात्मा की शान में कुछ नहीं कर रहे हैं। सभी काम इतनी सुन्दरता से होते हैं। इसके साथ में ऐसे बन जाते हैं कि आश्चर्य की बात। लेकिन सहजयोग में ध्यान धारणा लोग इसलिए करते हैं कि मेरे भूत भाग जायं, अधिकतर। सहजयोग में लोग पैसा थोड़ा बहुत देते हैं कि मेरे पास धन आ जाय। या तो उसके आगे लोग सोचते हैं कि सहजयोग में आने से मुझे कोई Position (पद) मिल जाएगी।

सहजयोग में आने से आप आकाश, पाताल और पृथ्वी तीनों लोक के राजा हो जाते हैं। अब इसके आगे क्या होने का ? आप पूछिएगा, अब तो हो गया पूरा, अब आगे क्या होना ? इसके आगे तुम्हें दाता होना चाहिए। जो राजा है तो उसको राजा बनाकर बिठा दिया तो वो देख रहा है कितने उच्चासन पर मैं बैठा हूँ। वाह ! वाह ! कितनी बढ़िया चीज रखी है माँ की कृपा से। बड़ा अच्छा सब बना हुआ है। भई, तुम राजा हो, देने की बात करो। और राजा हो तो थोड़े बहुत भिखारी अभी हो ही। लेकिन समझ लो, थोड़े हो तो कोई हर्ज नहीं, लेकिन देने की बात करो। मेरा मतलब पैसे से कभी भी नहीं होता, आप जानते हैं। अपना पूरा चित्त

सहजयोग में देना चाहिए। पूरी तरह से सहजयोग को समझना चाहिए।

(अब यहां से मराठी भाषण का अनुवाद है।)

सब लोग पीछे मुड़कर मत देखिए। अभी तक हमारी स्थिति तांगे वालों की जैसी है या धोबियों जैसी। यहां पर बैठे हो तो एकचित्त होकर मुझे सुनिए। वहां पीछे किसलिए देखना है ? क्या आपने लोग नहीं देखे हैं ? यह ध्यान में रखिए कि आप सहजयोगी हैं। राजे महाराजे पीछे मुड़ने के लिए पहले दस हजार मोती गिनवाएंगे। फिर अपनी गर्दन पीछे घुमाएंगे। हम कोई तांगे वाले थोड़े ही हैं इधर उधर देखकर चलने के लिए। तो वह जो शान है वो भी आई नहीं। जब डांटना होता है तब मुझे मराठी में अच्छी तरह से आता है। हिन्दी जरा posh (शाही) भाषा है।...मैं हंस कर टाल रही हूं, लेकिन आज का विषय गम्भीर है। अब जरा मराठी में बता रही हूं कि रामदास स्वामी अपने यहां हुए, ज्ञानेश्वर हो गए। नाम लेते ही vibrations (चैतन्य लहरियां) शुरू होती हैं। केवल नाम से ही सारी सप्तशती कहने जैसे एक नाम में ही सब कुछ है। ये किससे ? सारे चक्र एकदम उत्तेजित होते हैं। किसलिए ? साईंनाथ का केवल नाम लेने से ही मेरा सारा शरीर डोलने लगता है। किस कारण ? क्योंकि वे थे ही बहुत बड़े। आप भी हो सकते हैं। आपको वह बनना है इस तरह की कुछ महत्वाकांक्षा रखिए। नहीं तो अब हो गया, हम आ गए, हमारा सब कुछ ठीक-ठाक है। ये जो सहजयोगी की स्थिति है इसे बदलना है, ये मेरा विचार है। बीवी-बच्चों की बहुत सेवा की। ये हुआ, वह हुआ, बहू की चार बातें सुन लीं। अब आगे का हमें किस तरह से प्राप्त होगा ये देखना चाहिए। अब भी हमारा दिमाग कहां जा रहा है ? किस तरफ बहे जा रहे हैं ? क्या स्थिति है ? हर मनुष्य को अपने आपसे प्रश्न पूछना है 'मैंने क्या किया सहजयोग के लिए' ? ये प्रश्न किसी और का नहीं, क्योंकि अब मैं बोल रही हूं। तो कहेंगे हां, श्री माताजी उनके बारे में कह रही हैं, मेरे बारे में नहीं कह रही हैं। वे तो मेरे बारे में कुछ नहीं कहतीं। हमेशा औरों के बारे में कहती हैं। मैं तो बहुत ही अच्छा हूं। लेकिन ये सब मैं हर एक को कह रही हूं। सबको देखना है इस साल हम मां को कुछ करके दिखाएंगे। अब मैं लन्दन जा रही हूं। मुझे पुरण पोली बनाकर खिला दी तब हो गया काम, ऐसा औरतें समझती हैं। श्री माताजी को हमने पुरण पोली बनाकर खिलाई, नहीं तो श्रीखंड ज्यादा से ज्यादा। मुझे क्या करना है पुरण पोली और श्रीखंड से और क्या करनी है साड़ी ? मेरा सब कुछ विश्व है। उसकी जो महत्वपूर्ण चीज है उसका कुछ कीजिए। पिछला जो हुआ बस हुआ। जो कुछ देवी की स्तुति हुई वो सब आपने कर ली। हमने स्वीकार कर लिया, करना ही पड़ता है, क्या करें ? जो भुगतना है वह भुगतना ही पड़ता है। अब देवी होकर आए हैं। तो वह सब ताम-झाम चाहिए ही और वे सब हम करते ही हैं। परन्तु इतना सब करके भी आप कहां जा रहे हैं ? केवल पंडितजी बनकर बैठोगे क्या ? हमको भी कुछ सहजयोग में करके दिखाना है, हर-एक को। हर-एक लड़की को, हर-एक मां को, हर पिता को और हर-एक लड़के को, सभी को।

तुम्हारी कोई चार सहेलियां हैं। उन्हीं को हल्दी-कुंकुम के कार्यक्रम में बुलाकर सहजयोग बताओ। कितनी बार कहा है। हल्दी-कुंकुम का समारोह करो और औरतों को बुलाओ। उन्हें सहजयोग के बारे में बताओ, श्री माताजी के बारे में बताओ। सहजयोग इस तरह से फैलाना चाहिए। नये तरीकों से फैलाना चाहिए। गहन होने के लिए आप लोगों को ध्यान-धारणा करना जरूरी है। कुछ लोगों ने किया है, थोड़ा-बहुत। परन्तु इसका कोई अन्त है क्या ? मैंने अगर कहा कि अब मैंने बहुत कर लिया,

अब बस हो गया, बहुत हो गया, अब कल से मेरा मुंह नहीं देखना। मान्य है आपको ? है मान्य ? इतनी उम्र हो गई है। फिर भी किसी को नहीं लगता कि मेरी उम्र हुई है। अभी मेरे सारे प्रोग्राम लिखकर आए हैं। अब वहाँ जाने के बाद मुझे शटलकॉक गेंद की तरह वे इधर-उधर घुमाएंगे। अब हमें क्या करना है ? मैंने किया वह बहुत कुछ है। आज मेरा जन्म दिन है। लेकिन अब साठ साल के बाद जो जन्म दिन आता है वह (उतरत्या दशेला) ढलने लग जाता है। ध्यान देना है कि ये समय आपातकाल का है। और माँ को कुछ करके दिखाना है। अब प्रधान साहब चल बसे तो मुझे लगा कितना बड़ा मेरा नुकसान हो गया। प्रधान कितने काम के आदमी थे। उन्होंने क्या मेहनत की उस उम्र तक ! इतना ही नहीं, सारे जजों को मेरे बारे में बताया, सारे वकीलों को बताया। उन्हें ले आए मेरे पास। वह तो किया ही। मेरे अमेरिका जाने पर मेरे लिए अपना खर्चा करके आते थे। एक बार मैं अपना खर्चा करके उन्हें ले गई थी। फिर वे हमेशा अपने पैसे खर्च करके मेरे पास आते थे। उनका इतना प्यार था। कोई भी सरकारी काम हो, कानूनी काम हो, मुझे आकर बताते थे। देखिए, श्री माताजी, मैंने ये काम लिया है। यहां इसमें खोट है। फिर मैं उन्हें कहती थी, इसे इस तरह से आप कीजिए। तो वे हमेशा कहते थे, श्री माताजी, आप से बड़ा वकील मैंने नहीं देखा है। कोई भी उन्हें काम दो। लड़कियों की शादी करनी है, आर्य समाज में जाकर पता निकालकर लाएंगे। हॉल बुक करो, कर लिया। पत्नी का उन्हें कुछ सहाय्य था, पर वह जरा कमजोर औरत है। जब वे चल बसे उससे पहले मैंने तीन बार यत्न किया मैं उनके यहां जाऊं, पर न जा सकी। तभी मैंने सोचा अब यम की कोई इच्छा नहीं है, मैं जाऊं। इसीलिए मेरा वहाँ जाना नहीं हुआ। पर वह मनुष्य कितने काम के थे। बार-बार मुझे उनकी याद आती है। बीच में ही कहती हूँ, प्रधान से पूछ लीजिए सब ठीक है कि नहीं। बिलकुल अपने पास का कुछ खो गया है, इस तरह लगता है। एकदम सुज्ञ और विवेकी मनुष्य थे। उनका लड़का कैसा है, उसमें कभी उनका चित्त नहीं। सुज्ञ व्यक्ति कभी ज्यादा बड़बड़ नहीं करते। कभी भी गरम शब्द नहीं उनके मुंह में, कभी भी गरमी से उस मनुष्य ने बात नहीं की। 'अजातशत्रु'। एक भी मनुष्य प्रधान जी का दुश्मन नहीं होगा, अजातशत्रु। गरम शब्द कभी बोलते ही नहीं थे। कभी भी बड़प्पन नहीं दिखाते थे। अत्यन्त गुणवान मनुष्य थे। कभी भी उन्होंने पैसों की गड़बड़ नहीं की। किसी चीज में कोई गलती नहीं। उनसे छोटी उम्र वाले लोग उन्हें जवाब देते थे। मुझे बताते थे। उनकी आंख में आंसू आ जाते थे। फिर मुझे भी रोना आता था। उनसे कहा, प्रधान जी, सह लीजिए, क्या करें ? सहजयोगी ही हैं। उन लोगों से कुछ कहेंगे तो उन्हें लगेगा श्री माताजी आपका पक्षपात करती हैं। हमने उनके लिए कुछ भी नहीं किया। कुछ करने लगते तो उनके बच्चे कहते, हमारे पास पैसे हैं, आप मत कुछ कीजिए। पर अब उनकी तरह के लोग कहाँ से आएंगे ?

कुछ भी काम हो, प्रधान को फोन करें, सबकी सूची बनी रहेगी। कोई आया गया सबकी चिन्ता रखते थे। Airport (हवाई अड्डा) आते तो सबका ख्याल रखते, कौन कौन आया, कहाँ गया, कहां बैठा, सब कुछ। और कुछ भी दिखावा नहीं, मैं कर रहा हूँ, मैं कुछ हूँ। अब ऐसे परिपक्व लोग दुनिया से जाएंगे और आप अगर वैसे परिपक्व नहीं बनोगे तो ये बीच का रिक्त स्थान कैसे भरेगा ?

अजातशत्रु थे वे। कभी भी किसी को उन्होंने डांटा नहीं। कभी भी उन्होंने किसी के विरोध में मुझे नहीं कहा। केवल किसी ने यदि उनका अपमान किया तो बताते थे, इसने मेरा बहुत अपमान किया है। आज बड़ा खुशी का दिन है मेरा जन्म-दिन है। पर आज मुझे उनकी बहुत याद आ रही है। हमसे जो कुछ होगा वह हम उनके लिए करेंगे।

परन्तु आज आप निश्चय करिए कि जिस तरह प्रधानजी ने श्री माताजी की मदद की उस तरह हम भी करेंगे। कभी पत्नी का रोना नहीं, बेटे का नहीं, कभी भी नहीं। उनकी पत्नी ऐसी पकड़ (बाधा) वाली थी, परन्तु उन्हें कभी भी पकड़ नहीं आई, मुझे बड़ा आश्चर्य होता था। उनका कोई सा भी चक्र कभी भी नहीं पकड़ता था। आपको आश्चर्य होगा, कभी आज्ञा भी उनका नहीं पकड़ता था। कोई भी चक्र नहीं पकड़ता था, आश्चर्य की बात है। अपने यहां जिसकी पत्नी पकड़ वाली हो उसका पति उससे भी ज्यादा पकड़ा हुआ रहता है। ऐसे लोग हुए हैं। और लोगों ने अपमान किया तो भी उनका कभी भी मेरे साथ वाद-विवाद नहीं। उन्होंने मेरा अपमान किया, कभी नहीं। उलटे मेरा आभार किया, जाने दो, उतना ही। हमारे यहां बहुत से लोग सहजयोग में आते हैं। और क्षेम भी बहुतों को मिला है। जिन्हें नौकरियां नहीं थीं उन्हें अच्छी-अच्छी नौकरियां मिल गईं, पैसा बना, किसी का व्यापार अच्छा हुआ, बहुत कुछ बन गया। परन्तु प्रधान जी का ऐसा कुछ नहीं हुआ। उनके सारे बच्चों की अच्छी नौकरियां थीं। और पैसों की उन्हें चिन्ता नहीं थी, उम्र के हिसाब से भी कहिए। लेकिन पहले से थोड़ी अच्छी स्थिति थी। परन्तु वह कभी भूले नहीं। श्री माताजी कुछ चाहिए तो कहिये। कुछ कहना है तो कहिए। अगर मैंने कहा—प्रधान जी, पांच बजे आइए, तो मैं कहीं भी रहूँगी तो भी वे वहां पहुँचते थे। इतने वृद्ध, गृहस्थ, पर समय से पहुँचते थे। मेरी लड़की का मकान इतनी दूर था। वहां भी बिलकुल समय से पहुँचते थे। कहीं भी बुलाओ, एकदम समय से! कभी भी उन्होंने मोटर की मांग नहीं की, गाड़ी की मांग नहीं की। मेरे घर खाना खाने आइए, ये भी आग्रह नहीं किया। केवल एक दो बार कहा होगा, तो मैंने कहा, प्रधान जी वैसा कुछ मत कहिए, तो कहते, अच्छा श्री माताजी, नहीं कहूँगा। मेरे लड़के को देखिए, बहू को देखिए, उसके समुर को देखिए। ऐसा कुछ नहीं। कभी पैसों का रोना-धोना नहीं। अमेरिका आये तो मैंने पूछा, प्रधानजी, आप को कुछ पैसा चाहिए? नहीं, श्री माताजी, मेरे पास बहुत है। मेरे बेटे कमाते हैं। जरा सा उनके लिए कुछ किया तो कितना उन्हें याद रहता था। एक बार लंदन आये थे, तो मैं उन्हें पैरिस ले गई। वहां पर खर्चा मैंने किया। तो सौ बार कहते थे, माताजी, आपके कारण सब कुछ हुआ। मैंने कहा, पैरिस ले गई तो ऐसा क्या हुआ? अब ऐसे सुज्ञ लोग कहां हैं? हर समय मेरे सामने आते ही, "मेरे बेटे का ऐसा करिए, बेटी का फलाना करिए"। मुझे वोरियत हो गई है इन बातों से! आपको पता नहीं कैसे नहीं होती? परन्तु सभी लोग इस तरह नहीं हैं। बहुत से लोग अत्यन्त constructive (अच्छा कार्य करने वाले) है। और हर एक को ऐसा कहना चाहिये, मां, हमें सहजयोग के लिए क्या करना है? इतना ही कहिए आप। जो कहिए वह करने के लिए हम तैयार हैं। अब एक प्रधान जी चले गये तो सौ आदमी उनकी जगह तैयार होने चाहिए। तो आप सहजयोगी हैं। एक रक्तबीज का एक सिपाही मरा, तो उसके खून की एक बूंद से एक राक्षस, इस हिसाब से राक्षस बने। अब इन सहजयोगियों का क्या होने वाला है? सौ आदमी खड़े होने चाहिए। और जो काम करते हैं वे गरम लोग हैं। गरम नहीं तो अखडू लोग हैं। अखडू नहीं, तो कुछ कामचोर हैं। अब बिलकुल ध्यान में रखना है कि हम श्री माताजी के हाथ के ऐसे कुछ साधन बनेंगे, ऐसे सूत्र बनेंगे कि माताजी को लगेगा कि हम ये सारा विश्व जीत लेंगे।

आपको आश्चर्य होगा, अभी हम पठानकोट गये थे, वहां से धर्मशाला। कुछ भी नहीं पढ़े हुए, एकदम अनपढ़ लोग, गांव के लोग। उन्हें कहा गया, देवी आने वाली है। मेरा चेहरा देखा, पहचान गये, "हम तो देवी जागरण के लिए आएंगे"। ढाई हजार लोग प्रोग्राम में आए और तुरन्त पार हो

गये। कितनी उन्हें देवी की श्रद्धा ! सारी शक्तियां उनमें बहने लगीं ! हमें तो देवी जागरण करना था। क्या उनके वे तेजस्वी चेहरे ! और क्या सब कुछ ! देखने लायक था। मुझे लगा अब मैं अपने घर में आ गई हूँ। बिलकुल नन्दनवन देवी का वर्णन ! वह स्वत: मणीपुर (चक्र) रहती हैं। ऐसे लगा हम अपने घर आये हैं। सब लोग नये-नये कपड़े पहनकर आये थे। यहां तो पूजा में फटे कपड़े पहनकर आते हैं। कहीं बैठकर साड़ी गन्दी हो गई तो ! (आज मेरी भी साड़ी फटी है।) जैसे अनिच्छा से सब कुछ करते हों। उन लोगों का वर्णन नहीं कर सकते, इतना उनमें उल्लास था। इतना सब वातावरण आह्लाददायी था, मैं आपसे कह नहीं सकती। मुझे लगा यहां से कहीं जाएं ही नहीं। वे कहते थे 'शेरांवाली', 'पहाड़ों वाली' ! मुझे लगता ही नहीं था कि मेरी उम्र हो गई है। मैं वहां ऊपर चढ़ती थी, कहीं से भी उतरती थी, कुछ नहीं लगता था। क्या वे लोग ! और क्या वहां का सारा वातावरण ! मेरे दिमाग में घूम रहा है कि उन्हें ही अपने साथ में लेना चाहिए ! यहां पर महाराष्ट्र वगैरा में ताला लगा दें और वहीं चले जायं, वही अच्छा होगा। और फिर उन्हें यहां पर लाना चाहिए। आप लोग नौकरियां संभालते रहिए। इतने सीधे-सरल, पहुँचे हुए वे लोग हैं। सारा आनन्द ही आनन्द, बहुत मजा आया, उन लोगों को भी और हमें भी। उन्हें कुछ बताना भी नहीं पड़ा। बीस-बीस मीलों से लोग पैदल आये थे। यहां हम नहीं आ सके माताजी क्योंकि, हमें टैक्सी नहीं मिली। Air-conditioned (वातानुकूलित) गाड़ी चाहिए तब हम आएंगे। नहीं तो कैसे आए ? बीस-बीस मीलों से लोग छोटे-छोटे बच्चे लेकर के आए थे। सवेरे से निकले होंगे। प्रोग्राम दस बजे था। बस देखने लायक था ! स्वर्ग जमीन पर उतरा था। वहां पर कोई इतनी अच्छी व्यवस्था नहीं थी। खुला आंगन। उसके पीछे एक बड़ा पहाड़ था। इतने vibrations (चैतन्य लहरियाँ) थे कि मुझे ठण्ड लगने लगी। इतनी जोरों से चैतन्य की लहरें आ रही थीं। पीछे एक पहाड़ जैसा था। उससे टकरा-कर आ रही थीं। सबको ठण्ड लगने लगी। धूप में बैठे थे, तब भी ठण्ड लग रही थी। एक पत्ता भी नहीं हिल रहा था। लग रहा था हम 'आदिशक्ति' हैं। यहां पर मुझे शक हो जाता है कि है या नहीं ? वहाँ सचमुच लगा कि हम आदिशक्ति हैं।

वहां भयंकर बारिश हो रही थी। तीन दिन से सतत बारिश हो रही थी। बाहर निकलने की मुश्किल थी। बिजली कड़क रही थी। ऐसे में वहां के एक व्यक्ति ने मुझे कहा, "मां, ऐसी कृपा करें जो बादल फट जाय और सारा वातावरण शुद्ध हो जाय, तो बहुत जनता आएगी।" मैंने कहा, हां वह सब मैं कर दूंगी। फिर एकदम निरभ्र आकाश था उस दिन, बिलकुल निरभ्र (साफ सुथरा)। उस दिन वहां मेरी पूजा हुई और मुझे कुछ नहीं हुआ। ये सब हो गया। यहां तो पूजा के बाद मुझे इतनी परेशानी होती है। पूजा के बाद लगता है अब क्या करूं। लेकिन वहां कुछ नहीं, सब साफ हो गया। उसके बाद ही सारा सफर किया। कुछ नहीं हुआ। और यहां पूजा के बाद मोटर तक जाने की हिम्मत नहीं रहती और कब घर जाकर आराम करूंगी, ऐसी हालत होती है। उसका कारण है कि आप शुद्ध भी हो गये हैं तब भी उस शुद्धता का क्या अर्थ है, उसका क्या महात्म्य है, उसका कितना प्रकाश हम संसार में दे सकते हैं, उसकी कल्पना आपको नहीं है। दिये बगैर आपमें बहेगा कैसे ? हवा का बहाव कैसे होता है ? एक तरफ से ही दरवाजा खोला तो दूसरी तरफ से कैसे आएगा ? केवल अपने लिए एक नाला रख दिया और उसी में घूमते रहे तो उसकी गन्दगी फिर मेरी तरफ आती है। परन्तु कुछ देने के मन से आप बैठेंगे तो आज से निश्चय करिए, जो कुछ हमें माताजी ने दिया है वह सब हम बांट देंगे। तब आपके पास आएगा और मुझे तकलीफ नहीं होगी। पहले ही आपके प्याले में गन्दगी होगी तो मैं उसमें क्या भरूं ? यहां से भरने

बैठी थी, वह तो उसमें जाता नहीं और मेरी ही तरफ फिर से आ जाता है। अब कहना है कि अब अपना प्याला खाली कर दीजिए और उस खाली प्याली में अमृत भर लीजिए। अमृत भर-भर के देना पड़ता है। इतना जमकर सब बैठा है, वह सब निकाल दीजिए।

हम धर्मशाला गये थे। उसका नाम है धर्मशिला—धर्म की शिला। और हिमालय के पैरों तले। आपको पता है, वे देवी के पिता हैं। अब वहां होकर आने के बाद लगता है न जाएं दिल्ली और न जाएं मुम्बई। और लन्दन तो उनसे भी गया बीता है। किसलिए परमात्मा ने बनाया है पता नहीं। परन्तु फिर से आप लोगों को देखने के बाद, माँ का हृदय ! कैसे भी हो, तो क्या ? अपने ही तो हैं। मेरे ही हैं सब। माँ को क्या ? कैसे भी हो, खून भी बेटे ने किया तो कहेगी, तू अब मेरा भी एक खून कर दे। वैसे हो हैं सब। अब आपको इतना बड़ा किया, इतने पद पर बिठाया। अब मेरी भी उम्र हो गई है। तब इस उम्र के हिसाब से आपको भी समझ लेना चाहिए और कार्यान्वित होना चाहिए। कार्य करना चाहिए। चार लोग काम कर रहे हैं, दो इधर जा रहे हैं, दो उधर देख रहे हैं। पूरी तरह जुट जाना है। ये हम माँ को करके दिखाएंगे। अब मराठी में ही कहती हूँ। मराठी भाषा अत्यन्त प्रेम की, सौष्ठवपूर्ण व सुन्दर भाषा है। परन्तु उसमें की जितनी कठोरता है वही हम सीखे हैं। अत्यन्त सुन्दर भाषा है। परमात्मा की भाषा है कहना चाहिए। संस्कृत के इतनी निकटतम, इतनी अच्छी, निर्व्याज ! इसमें (मराठी में) आपको कुछ कहना है। हमें तो उससे आपसे हमें कुछ भी लेना ही नहीं है। बस बह रही है। अस्खलित, इतनी सुन्दर है। और उस भाषा में रहकर भी आपको अभी प्यार से बोलना नहीं आता। उस मराठी भाषा का दूसरा उपकार ये है कि पूरी कुण्डलिनी उस मराठी भाषा में लिखी है। नाथपंथ (मराठी ग्रन्थ) के इतने उपकार हैं आप पर, बड़े-बड़े सन्त-साधुओं के, माने सिक्खों के दसवें गुरू वे भी यहां नांदेड में आकर शिवाजी महाराज से मिले थे। शिवाजी महाराज जैसा राजा हमारे यहां हो गया। पूरी दुनियां में ऐसा राजा नहीं मिलेगा। ऐसे हमारे शिवाजी, दूसरा नहीं मिलेगा ऐसा। इसका दुःख होता है। तो एक नाले में दो कमल उग आये और वे कहने लगे हम कमल हैं, हम कमल हैं। उससे कुछ नहीं बनने वाला। हम कमल हो सकते हैं, यह ध्यान में रखकर कमल बनकर दिखाना है। मैं फिर से विनती करती हूँ क्योंकि अब मैं कल जा रही हूँ। अब तक जो कुछ हुआ वह बहुत हुआ। अब इसके आगे हर-एक को कमर कसकर तैयारी में जुट जाना है। इसके आगे युद्ध है। बहुत बड़ा युद्ध है। उसे लड़ना है। सारा समय खुद की सफाई में मत लगाओ। मैं अब यहां बात कर रही हूँ, तब भी लोग यहां पर बन्धन दे रहे हैं। आपको कौन पकड़ेगा ? बन्धन काहे को डाल रहे हो ? जहां आप बैठोगे वहां बन्धन पड़ेंगे, इतनी आप में शक्ति है, जानते हैं ? जहां नजर जाएगी वहां बन्धन पड़ेंगे। किसलिए अपने आपको बन्धन दिये जा रहे हो ? डरे-डरे से क्यों हैं ? तलवार नहीं है ऐसी बात नहीं है। सब कुछ है। आपके पास केवल इच्छा चाहिए। अब डरपोक स्वभाव नहीं रहना चाहिए, विशेषतः औरतें। और पुरुषों की जो ज्यादती है वह खत्म होनी चाहिए। सहजयोग का एक प्रतिष्ठावान व्यक्ति बनकर मैं आचरण करूंगा, ऐसा एक निश्चय मन में रखकर अब चलना है। अगली बार जब मैं आऊंगी तब मुझे दीखना चाहिए कि एक-एक मनुष्य ने हजार-हजार लोग खड़े किए हैं। आपको मैं विश्वास दिलाती हूँ, आप भाषण दे सकते हैं। सहजयोग सारा आप सीखे हैं। आपको सब कुछ मालूम है। ये सारा केवल दिमाग में रखकर शमशान में भस्म होने के लिये नहीं है। उसका प्रकाश सब तरफ जाना चाहिए उसके लिए ही आपके मस्तिष्क में हमने प्रकाश डाला है। कल जैसे सब के

सर शमशान में फुकते हैं वैसे आपके नहीं हैं। उसका प्रकाश जब सारी दुनियां में फैलेगा तब आपको मालूम होगा। सहजयोग के योगी को कभी भी जलाते नहीं हैं। प्रधान जी को आपने जला दिया, ये मुझे अच्छा नहीं लगा। परन्तु मैं कुछ नहीं बोली। उनकी हमको समाधी बनवानी चाहिए थी। अभी तक उसकी कुछ व्यवस्था नहीं हुई है। वह व्यवस्था करनी चाहिए। परन्तु सहजयोगी उस प्रकार का होना चाहिए। उसकी समाधि से चैतन्य लहरियां आएंगी। उस पर कितनी भी चद्दरें चढ़ाने के बाद भी उन फूलों की सुगन्ध आएगी। इस तरह आपकी स्थिति है। परन्तु कैसे कहा जाय? हीरे को कहना, तू हीरा है, गन्दगी में मत लेटो। श्री माताजी महान हैं, पर आप भी कुछ कम नहीं। ये याद रखना है। परन्तु उसकी केवल अहंकारी वृत्ति रखने से कोई अर्थ नहीं है। सचमुच अगर माताजी में इतनी शक्ति है, तो हममें भी है। सब कुछ शक्तियां आपके पास हैं। उस छोटे से अंडे में आप छिपे हो, निकलो बाहर। तो उससे बाहर निकल कर आकाश की तरफ आपको समष्टि (collectivity) डालनी है तब ही कुछ होगा। अब कल मैं जा रही हूँ। परन्तु मेरा ध्यान इधर रहता है। मुंबई वालों पर सबसे ज्यादा जिम्मेदारी है क्योंकि मैंने मुंबई में सबसे ज्यादा काम किया है और मेहनत की है। और इसी मुंबई में महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती का उद्भव हुआ है। तो आपको ये दिखाना है, आराम छोड़कर और राजकारण छोड़कर, सुज बनकर हम सहजयोग में क्या कर सकते हैं। ये सभी को दिखाना है। और मुझे आशा है ये सब आप गुलामी छोड़ दीजिए।

इस बार मुझे एक अनुभव आया। उससे मुझे आश्चर्य हुआ। जिन लोगों पर मैंने इतनी मेहनत की है वे लोग एकदम बेकार के निकले। क्यों इतनी मेहनत करें ऐसे लोगों पर? बेकार लोग हैं एकदम! तो आज मेरा जन्म दिन मना रहे हैं। आज मेरा पूजन है। तो आज मेरा पूजन कृपया हृदय से कीजिए। यह मैं इस उम्र में मांग रही हूँ। इतना मुझे दीजिए। हृदय में एक ही बात कहना है श्री माताजी हम वीरों की माता हैं, भगेड़ुओं की नहीं। गांधीजी ने केवल स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी तो हमारे पिता जी जैसे लोग सारा घर-द्वार छोड़कर जंगल-जंगल घूमे। हम राजमहलों में पले लोग! कितना सहन किया! आपको तो आश्चर्य होगा। हमारे पढ़ाई के लिए पैसे नहीं थे, कुछ भी नहीं। घर के जेवरात बेचकर हमारी मां ने हमें पढ़ाया। ऐसी स्थिति में हम रहे। और ये सहजयोग उससे कितना बड़ा है। सारे विश्व की स्वतन्त्रता की ये बात है। और उस हिसाब से हम कर क्या रहे हैं? राजकारण अभी तक मैंने इतना कुछ नहीं कहा था, परन्तु आज कह रही हूँ। क्योंकि अब उम्र होने लगी है। तो दिमाग में रखिए, हमें कुछ करके दिखाना है, हमारे होते हुए करके दिखाना है। बाद में किया तो नहीं होने वाला। दूसरा ये है कि इस साल 'क्रोधन' नाम का संवत्सर है। इसलिए थोड़े से क्रोध को काम में लाना पड़ रहा है। शालीवाहन ने ही लिखा है कि इस समय जो साल है वह क्रोध में जाएगा। कहने का तात्पर्य है कि आज मैंने लम्बा-चौड़ा भाषण किया, सहजयोगियों को समझाने के लिए। आप क्या हो, ये जान लीजिए। वह जानकर हमने क्या करना है, ये भी देखिए। हम अपने गांव गये थे, वहां क्या किया? बैठे थे क्या आप? नहीं। मन्दिर में गये, खरीदारी की, सबसे गाढ़ भेंट की, फिर आ गए वापस। अच्छा, आप कौन हो? आप क्या बैलगाड़ी हैं, किसी भी गांव में जाकर वहां से खरीदारी करके चीजें लाने के लिए? जाकर बोझा भर कर लाते हैं! आप साधु-सन्त हैं। अपने देश में ऐसे सन्त और सन्तनी हो गए। नामदेव की बात लीजिए, एक दर्जी थे। कितना बड़ा काम किया उन्होंने। तुकाराम क्या

थे ? चोखा मेना कौन थे ? सजन कसाई कौन थे ? कितना काम किया उन्होंने ? उनका कोई भी साथ देने वाला नहीं था। जना बाई कौन थी ? मेना बाई कौन थी ? कितना काम किया उन्होंने परमात्मा का ? ज्ञानेश्वर इतनी छोटी उम्र में कितना काम कर गए ? आपने क्या काम किया ? उनको कुण्डलिनी जागृति तो नहीं आती थी, नहीं तो वह भी उन्होने किया होता। वह भी आपको हमने दिया है। गणपति के स्थान पर आपको बिठाया है। अब कुछ करके दिखाइए। आपको दिखाना ही है। अगली बार मैं आकर देखूंगी किसने क्या किया है ? औरतों ने हल्दी-कुंकुम (हल्दी-कुंकुम महाराष्ट्र का एक महत्वपूर्ण औरतों का धार्मिक समारोह) करना और औरतों को अपने घर बुलाना। सबको ठीक से, तौर तरीके से रहना है।

अब भी ऐसे सहजयोगी हैं जो व्रत रखते हैं। कहा भी व्रत नहीं रखना है, तब भी रखते हैं। पता नहीं क्यों रखते हैं। जो मर्यादाएं हमने बनाई हैं और जो विश्वधर्म की मर्यादाएं हैं उसमें रहना ही पड़ेगा। और उन मर्यादाओं में आप नहीं रहे और उनसे बाहर गए तो आप पर आपत्ति आएगी। आपके साथ कुछ तो गुजरेगी। कल ही एक सज्जन मिले थे। कह रहे थे मैं बिलकुल ठीक हो गया था, पर फिर से तकलीफ शुरू हो गई है। क्या किया आपने ? फिर से उसी मार्ग पर गए थे क्या ? हाँ, थोड़े से, ज्यादा नहीं। अच्छा ! तो वहां भूत बगल में ही बैठे हैं, आपको पकड़ कर खाने के लिए। तो विश्वधर्म की मर्यादाओं में रहना पड़ेगा। शादी में दहेज लिया तो, ज्यादा नहीं थोड़ा सा, बस हो गया। उस मर्यादा में ही रहना है। विश्वधर्म की मर्यादा परमात्मा की मर्यादा है। उसे नहीं लाँघना है। अब आप मराठी, गुजराती कुछ नहीं रहे, आप हिन्दू, अंग्रेज कुछ नहीं हैं। आप विश्वव्यापी निर्मला धर्म के अनुयायी बहुत बड़े हो गए हैं।

आज ही प्रतिज्ञा कीजिए, अपने स्वयं के दोष व गलतियां देखेंगे। अपने हृदय से सब कुछ अर्पण करेंगे। सबसे प्रेम करेंगे। जो मन दूसरों के दोष दिखा रहा है वह घोड़ा उल्टे रास्ते जा रहा है, उसे सीधे-सरल रास्ते पर लाकर आगे का रास्ता चलना होगा।

—श्री माताजी

❁ ❁ ❁

अपना चित्त इधर-उधर गिरना बिखरना नहीं चाहिए। यानी स्थिर होना चाहिए। कहीं छिटक नहीं जाना चाहिए। चित्त को पकड़े रहना चाहिए। चित्त पर नियन्त्रण होना चाहिए। चित्त से ही प्रगति होती है।

—श्री माताजी

❁ ❁ ❁

मैं आप पर कोई बन्धन नहीं डालती। आपको खुद बढ़ना है। जो खुद ही इसमें बढ़कर के ऊंचा उठेगा, वो स्वयं को अनायास ही संवार लेगा। उसको कहने की जरूरत नहीं। जो काम कहने से हुआ वो फिर क्या सहज हुआ ?

—श्री माताजी

संक्रान्ति पूजा*

मुम्बई
१४ जनवरी, १९८५

अब आपको कहना है कि इतने लोग हमारे यहाँ महमान आए हैं और आप सबने उन्हें इतने प्यार से बुलाया, उनकी अच्छी व्यवस्था की, उसके लिए किसी ने भी मुझे कुछ दिखाया नहीं कि हमें बहुत परिश्रम करना पड़ा, हमें कष्ट हुए और मुंबईवालों ने विशेषतया बहुत ही मेहनत की है। उसके लिए आप सबकी तरफ से व इन सबकी तरफ से मुझे कहना होगा कि मुंबईवालों ने प्रशंसनीय कार्य किया है।

अब जो इनसे (विदेशियों से) अंग्रेजी में कहा वही आपको कहती हूँ। आज के दिन हम लोग तिल गुड़ देते हैं क्योंकि सूर्य से जो कष्ट होते हैं वे हमें न हों। सबसे पहला कष्ट यह है कि सूर्य आने पर मनुष्य चिड़चिड़ा होता है। एक-दूसरे को उलटा-सीधा बोलता है। उसमें अहंकार बढ़ता है। सूर्य के निकट सम्पर्क में रहने वाले लोगों में बहुत अहंकार होता है। इसलिए ऐसे लोगों को एक बात याद रखनी चाहिए, उनके लिए ये मन्त्र है कि गुड़ जैसा बोलें (मीठा-मीठा बोलो)। तिल गुड़ खाने से अन्दर गरमी आती है, और तुरन्त लगते हैं चिल्लाने। अरे, अभी तो तिल-गुड़ खाया, तो अभी तो कम से कम मीठा बोलो। ये भी नहीं होता। तिल-गुड़ दिया और लगे चिल्लाने। काहे का ये तिल गुड़? फेंको, इसे उधर! तो आज के दिन आप तय कर लीजिए। ये बहुत बड़ा सुसंयोग है कि श्री माताजी आई हैं। उन्होंने हमें कितना भी कहा तो भी हमारे दिमाग में वह नहीं आएगा। अगर हमारे दिमाग में गरमी होगी तो कुछ भी नहीं आएगा। ये गरमी निकलनी चाहिए। और ये गरमी हम में कहाँ से आती है? अहंकार के कारण। बहुत पहले जब मैंने सहजयोग शुरू किया तब सबका लड़ाई-झगड़ा। यहां तक कि एक दूसरे के सर नहीं फूटे, यही गनीमत है। बाकी सभी के सर ठीक ठाक हैं। परन्तु झगड़े बहुत, किसी का किस बात पर, किसी का किस बात पर। देखा आधे भाग गए, कुछ बच गए। मैंने सोचा अब सहजयोग कुछ नहीं होने वाला। क्योंकि एक आया काम करने, दो दिन बाद भाग गया, दूसरा आया, तीन दिन बाद भाग गया, ये स्थिति थी। उस आया, भागा में अब हमने सहजयोग जमाया है। पर उसके लिए आपकी इच्छा चाहिए कि कुछ भी हो हम परमात्मा को पाने आए हैं। हमें परमात्मा का आशीर्वाद चाहिए। हमें परमात्मा का तत्व जानना है। हमें दुनिया की सारी गलत बातें जिनसे कि कष्ट और परेशानियाँ हो रही हैं, नष्ट करनी हैं। तो यहाँ झगड़े नहीं करने हैं। इस अहंकार से सारी दुनियाँ में इतनी परेशानियाँ हुई हैं। अब सहजयोग में इसे पूर्णतया तिलांजली देनी पड़ेगी। तिलांजली माने तिल की अंजली। मतलब अब तिल-गुड़ खाकर इसकी (अहंकार की) अंजली आप दीजिए। मतलब इसके बाद हम कोई क्रोध नहीं करेंगे, गुस्सा नहीं

* मूल मराठी भाषण से अनुवादित।

करेंगे। एक बार करके देखिए। देखना चाहिए। गुस्सा न करके कितनी बातों को मनुष्य समेट सकता है। कितनी बातों का सामना कर सकता है। बहुत सी बातें ऐसी हैं जिनमें ज्यादा चित्त न रखने से उनके हल मिले हैं। और जो कुछ समस्याएं हैं वह पूरी तरह से हल हुई हैं। तो किसी बात में आपने बहुत ज्यादा चित्त रखा तो आप तामसिक स्वभाव के बन गए, ऐसा कहते हैं। तामसिक माने क्या ? तो कोई औरत है। अब उसका पति बीमार है, "मेरा पति बीमार है, मेरा पति बीमार है।" बाबा, है, मान लिया ! परन्तु तुम तो ठीक हो न ? तुम्हारी तबियत तो अच्छी है। उसका कुछ नहीं। पति है ये भी तो बड़ी बात है। परन्तु नहीं, एक छोटी सी बात को लेकर के हल्ला मचाना, दूसरों को हैरान करना। ये जो हमारे यहां बात है, उसका कारण है हमारे यहां छोटी सी बात को ज्यादा महत्व देना और बड़ी-बड़ी बातों की तरफ ध्यान नहीं देना। इन लोगों (विदेशियों) के लिए बड़ा क्या, छोटा क्या, सब बराबर है। कुछ नहीं मालूम। पर आप लोगों को समझना चाहिए। क्योंकि हमारा जो वारसा है वह इतना महान है। हम इस योगभूमि भारत में जन्मे हैं। इस योगभूमि में जन्म लेकर हमने क्या प्राप्त किया है ? हजारों वर्षों की तपस्या के फल-स्वरूप इस भारत में जन्म होता है। और उसमें भी हजारों वर्षों से महाराष्ट्र में होता है। लेकिन रास्ते पर पी कर पड़े हुए लोगों को देखकर मेरी समझ में नहीं आता ये महाराष्ट्र के हैं या और कहीं के ? ये कीड़े यहां कहां से जन्मे हैं ? यही नहीं समझ में आता ? अब आप सहजयोगी हैं और आपकी पूर्व जन्मों की तपस्या अब फलित हुई है। परन्तु इसका मतलब ये नहीं कि बाकी की, इस जन्म की, तपस्या माताजी ने करनी है।

इस जन्म की पहली तपस्या है आपस में मीठा बोलना, प्यार से रहना। ये पहली बात। इसीलिए पहला दिन हमने पूजा का शुरू किया है। उस दिन आप सब को मीठे बोल बोलने चाहिए। और मिठास से रहना चाहिए, क्योंकि मीठा बोलना ये सबसे आसान है। गुस्सा करना बड़ा कठिन काम है, और मारना तो आता ही नहीं है। तो इतने कठिन काम किसलिए करते हैं ? तो सीधी-सीधी बात, मीठा बोलो, बस।

अब हमारे यहां बहुत से लोगों का नाम (sur-name) "गोडबोले" होता है। तो मैंने सोचा इनके परिवार में लोग मीठा बोलते होंगे। तो सचमुच वे लोग बहुत मीठा बोलते थे। पर वे मीठी बातें करके लोगों के गले काटते थे। मैंने कहा ये कहां का मीठी बातें करने का तरीका ? तो बोले, हां, हमारे यहां पहले लोग बड़ा मीठा बोलते थे। उनके मीठा बोलने का लोगों ने बहुत फायदा उठाया। इसलिए अब हम मीठा बोलते हैं और लोगों के गले काटते हैं। मैंने कहा, ऐसा क्यों करते हैं ? इससे आपको क्या लाभ हुआ है ? वही लोग अच्छे थे जो मीठा बोलते थे और आराम से रहते थे। वे सन्तोष में रहते थे। किसी व्यक्ति के साथ आपकी लड़ाई हो गई, और उसके आपने गले काटे तो (गले काटना माने 'बगल में छुरी, मुंह में राम राम') तो आपने क्या पाया ? हमने क्या प्राप्त किया ? यह देखना है। तो आज का दिन विशेष त्यौहार का सभी को अत्यन्त सुशोभित करने वाला है। इस समय मुझे तो तनिक भी कटु नहीं बोलना है। बड़े संभालकर मैं बात करती हूँ। मैं इतना समझकर व्यवहार करती हूँ कि किसी को किसी बात से दुःख न पहुँचे। अब कुछ लोग आते हैं, वे मुझे झट से हाथ लगाते हैं उससे मुझे बड़ी तकलीफ होती है। वैसा नहीं करना चाहिए। परन्तु यह कैसे बताएं ? इसलिए सहती रहती हूँ। जाने दो, क्या करें ? अब कैसे बताऊं ? उनको दुःख होगा। ऐसी बहुत सी बातें मैं सहती हूँ। मेरी कोई बात नहीं, मैं सह सकती हूँ। जो सहन शक्ति मुझमें है, वह दूसरों में नहीं है। दूसरों को दुःखाने से अच्छा वही दुःख मैं सह लूं। यह बात जानने से उसका

दुःख नहीं महसूस होता। प्रेम के बारे में यही बात है। अपने प्रेम की शक्ति ज्यादा है और दूसरों में कम है। तो हम बड़े कि वे बड़े ? इस तरह का एक विचार ले लिया तो आप सहजयोग अच्छी तरह पा सकते हैं। हमें माँ ने प्रेम की शक्ति ज्यादा दी है, तो वे कुछ भी बोलें उससे हमारा क्या बिगड़ता है ? क्या जरूरत है उनसे लड़ाई-झगड़े करने की ?

धीरे-धीरे आपका स्वभाव शान्त हो जाएगा। तब आपका चेहरा तेजस्वी दिखाई देगा। जब लोग आपके निकट आएंगे तो कहेंगे, अरे ये कौन है ? परन्तु शान्त स्वभाव का ये मतलब नहीं कि, कोई आपको जूते मारे तो भी आप चुप रहें, ऐसा बिलकुल नहीं। केवल सहजयोगियों के लिए ख्रिस्त ने कहा है। किसी ने आपको एक गाल पे मारा तो आप दूसरा गाल आगे करिए, केवल सहजयोगियों के लिए, ख्रिस्त ने कहा है। औरों ने अगर एक मारा तो आप उसे चार मारिए, ये मैं कहूँगी। क्योंकि उनके जो भूत होंगे वे निकल जाएंगे। परन्तु सहजयोगियों का आपस में बातचीत करना शुद्ध हो। प्यार से आपस में बातें करनी है। ये बड़ी आवश्यक बात है। औरों के साथ आप कैसे भी रहें, कोई हर्ज नहीं है। परन्तु जो अपने हैं, ये सहजयोगी सारे मेरे शरीर में हैं। एक-एक मनुष्य मेरे शरीर के अन्दर है। आपने अगर एक-दूसरे को लातें मारीं, गालियाँ दीं तो मुझे ही गाली दी, ऐसा समझना चाहिए। क्योंकि अब देखिए किसी पेड़ की डालियां आपस में लड़ने लगेंगी तो उस पेड़ का क्या होगा ? और उन पत्तों का भी क्या होगा ? अब ये एक हाथ अगर दूसरे हाथ से लड़ने लगे, तो क्या होगा ? अगर ये चीज समझ में आ गई कि हम सब एक हैं, समग्र हैं, हमारे में इतनी एकता है कि हम सब एक शरीर के अंग-प्रत्यंग हैं। तब आपने किस तरह का व्यवहार करना चाहिए ? आपमें कितनी समझदारी होनी चाहिए ? कितना प्यार होना चाहिए ? आपस में कितना सुख बांटने की इच्छा ? इनके लिए क्या करूं ? इन्हें क्या अच्छा लगता है ? दिवाली के समय हम कुछ उपहार देते हैं या संक्रान्ति के समय क्या 'वाण' (उपहारस्वरूप वितरण की जाने वाली वस्तु) दें उन्हें ? तो जो सस्ते से सस्ता होगा ऐसा कुछ गन्दा सा बाजार से लाकर दे देना इसमें हम माहिर हैं! जो सबसे सस्ती कोई चीज है वह लाकर देते हैं। और ये लीजिए 'वाण' ! बहुत अच्छे ! फिर चाहे वह (जिसे दिया) उसको उठाकर फेंक दे। तो हृदय का बड़प्पन हुए बगैर ये बातें नहीं होने वाली। और उस हृदय के बड़प्पन की आपके लिए कोई कमी नहीं है। वह हृदय आप में है ही क्योंकि उसमें आत्मा का दीप जला है। उसने आपको प्रकाश दिया है। ऐसा स्वच्छ सुन्दर हृदय, उसमें जो कुछ बह रहा है, उसी की तरफ देखते रहना। मुझे यहाँ पर आप सबको देखकर लगा, अरे, इस हृदय के प्रकाश में क्या-क्या देख रही है ? कितना मजा आ रहा है ? ऐसा ही आपको होना चाहिए, कि हम सब माताजी के शरीर के अंग-प्रत्यंग हैं, हमने कोई गलती की तो माताजी को तकलीफ होगी। उन्हें तकलीफ हो इस तरह का हमें व्यवहार नहीं करना चाहिये। हममें एक तरह की सुज्ञता होनी चाहिए, एक तरह की पहचान होनी चाहिए। रोजमर्रा के व्यवहार में शालीनता होनी चाहिए। कहीं किसी व्यक्ति के पीछे पड़ना (तंग करना), कभी कुछ बहककर बड़बड़ाते रहना। बहुतों को गाना गाने की ही आदत होती है। किसी को कविता ही पढ़ते रहने की आदत होती है। वे कविता ही बोलते रहते हैं, तो कोई गाने ही गाते रहते हैं। ऐसा नहीं। जो ठीक है, व्यवहारी है, सौन्दर्यमय है, वही करना चाहिए। रोज के व्यवहार में भी सुन्दरता होनी चाहिए। अब आप माँ के लिए सब जेवर बनाते हो (इस दिन तिल के दानों के जेवर बनाने का रिवाज है।) कितने सुन्दर होते हैं वे ! परन्तु आप ही मेरे जेवर हो, आप ही से मैंने अपने आपको सजाया है। उन जेवरों में अगर स्वच्छता न हो या वे अशुद्ध हों, माने उनका जो

मुख्य गुण है, वही अगर उनमें नहीं हो। मान लीजिए सोने की जगह सोना न होकर पीतल है तो उसका क्या अर्थ है ? वैसे ही आपका है। आपमें की जो महत्वपूर्ण धातु है वही झूठी होगी तो उसे सजाकर मैं कहां जाऊंगी ? तो आप ही मेरे जेवर हैं, आप ही मेरे भूषण है। मुझे आप ही ने विभूषित किया है। मुझे किसी दूसरे आभूषण की आवश्यकता नहीं है। यही मैं अब आपसे विनती करती हूँ कि बात करते समय, बच्चों से हो या और किसी के साथ हो, अत्यन्त समझदारी से, अत्यन्त नम्रता से और आराम से सब कार्य होना चाहिए। किसी से भी जबर्दस्ती, जुल्म या जल्दबाजी करने की जरूरत नहीं है।

इसी तरह एक दिन ऐसा आएगा जब सारी दुनियां आपकी तरफ आश्चर्य से देखेगी, 'अरे ये कहाँ के लोग हैं ? ये कौन आए ?' तब मालूम होगा कि ये स्वर्गलोक के दूत हैं, सारी दुनियां को संभालने के लिए, सारी दुनियां को यशस्वी बनाने के लिए, और सबको परमात्मा के साम्राज्य के दरवाजे तक ले जाने के लिए, ये परमात्मा के भेजे हुए दूत हैं। ऐसे सभी दूतों को मेरा नमस्कार !

पूजा में आप मन्त्र बोल रहे हो और देवता जागृत हो रहे हैं और आप अपने हृदय में इसको स्वीकार नहीं कर रहे हैं इसलिए मुझे अकेली को अतिरिक्त ऊर्जा एकत्रित करनी पड़ती है। इसलिए यह अच्छा है कि, "आप अपने हृदय को खोलिए और पूजा के बारे में न सोचकर साक्षी रहकर उसे केवल देखते रहिए।

—श्री माताजी

❁ ❁ ❁

जो प्रधान चीज है वह है ध्यान करना। जो बड़ा लक्ष्य है उसे देखना चाहिए। वो चीज है ध्यान करना।

—श्री माताजी

❁ ❁ ❁

सब लोग यह याद रखिए कि मैं अब आपकी वाणी में मधुरता पाऊं। आपकी बातचीत में मिठास पाऊं, आपके व्यवहार में सुरुचि पाऊं। मैं इस चीज को अब माफ नहीं करूंगी, इसको आप जान लीजिए। किसी को भी किसी चीज के लिए दुःख देना बुरी बात है। कृपया एक-दूसरे का आदर कीजिए। आप सहजयोगी हैं दूसरे भी सहजयोगी हैं। आज आप किसी पद पर हैं दूसरा नहीं, ये पद आपने पाया हुआ नहीं, हमने दिया हुआ है। और जब चाहे इस पद से हम आपको हटा सकते हैं। इसलिए मेहरबानी से इसके योग्य बनें। नम्रतापूर्वक इसे करें।

—श्री माताजी

❁ ❁ ❁

आपके जीवन का लक्ष्य आत्मा को पाना है। आत्मा को पाते ही बाकी सब चीजें खत्म हो जाती हैं। अपने-आप बाकी सब चीजें घटित हो जाती हैं। इसलिए पहले ये सोचना चाहिए कि अपना चित्त आत्मा में रहे।

—श्री माताजी

॥ श्री निर्मला देव्यै नमो नमः ॥

श्री कुण्डलिनी शक्ति व श्री येशु ख्रिस्त*

हिन्दूजा ऑडीटोरियम
मुम्बई
२७ सितम्बर, १९७९

"श्री कुण्डलिनी शक्ति और श्री येशु ख्रिस्त" ये विषय बहुत ही मनोरंजक तथा आकर्षक है। सर्वमान्य लोगों के लिए ये एक पूर्ण नवीन विषय है, क्योंकि आज से पहले किसी ने श्री येशु ख्रिस्त और कुण्डलिनी शक्ति को परस्पर जोड़ने का प्रयास नहीं किया। विराट के धर्मरूपी वृक्ष पर अनेक देशों और अनेक भाषाओं में अनेक प्रकार के साधु संत रूपी पुष्प खिले। उन पुष्पों (विभूतियों) का परस्पर सम्बन्ध था। यह केवल उसी विराट-वृक्ष को मालूम है। जहां-जहां ये पुष्प (साधु संत) गए वहां-वहां उन्होंने धर्म की मधुर सुगंध को फैलाया। परन्तु इनके निकट (सम्पर्क) वाले लोग सुगन्ध की महत्ता नहीं समझ सके। फिर किसी सन्त का सम्बन्ध आदि-शक्ति से हो सकता है यह बात सर्व-साधारण की समझ से परे है।

मैं जिस स्थिति पर से आपको ये कह रही हूँ उस स्थिति को अगर आप प्राप्त कर सकें तभी आप ऊपर कही गयी बात समझ सकते हैं या उसकी अनुभूति पा सकते हैं क्योंकि मैं जो आपसे कह रही हूँ वह सत्य है कि नहीं इसे जानने का तंत्र इस समय आपके पास नहीं है; या सत्य क्या है जानने की सिद्धता आपके पास इस समय नहीं है। जब तक आपको अपने स्वयं का अर्थ नहीं मालूम तब तक आपका शारीरिक संयंत्र ऊपर कही गई बात को समझने के लिए असमर्थ है। परन्तु जिस समय आपका संयंत्र सत्य के साथ जुड़ जाता है उस समय आप ऊपर कही गयी बात को अनुभव कर सकते हैं। इसका अर्थ है आपको सहजयोग में आकर 'पार होना' आवश्यक है। 'पार' होने के बाद आप के हाथ से चैतन्य लहरियां बहने लगती हैं। जो चीज सत्य है उसके लिए आपके हाथ में ठंडी-ठंडी चैतन्य की तरंगें (लहरियां) आएंगी और वह असत्य होगी तो गरम लहरें आएंगी। इसी तरह कोई भी चीज सत्य है कि नहीं इसे आप जान सकते हैं।

ईसाई लोग श्री येशु ख्रिस्त के बारे में जो कुछ जानते हैं वह बाइबल ग्रन्थ के कारण है। बाइबल ग्रन्थ बहुत ही गूढ़ (रहस्यमय) है। यह ग्रन्थ इतना गहन है कि अनेक लोग वह गूढ़ार्थ (गहन अर्थ) समझ नहीं सके। बायबल में लिखा है कि "मैं तेरे पास ज्वालाओं की लपटों के रूप में आऊंगा।" इजराइली (यहूदी) लोगों ने इसका ये मतलब लगाया कि जब परमात्मा का अवतरण होगा तब उनमें से चारों ओर आग की ज्वालाएं फैलेंगी इसलिए वह उन्हें देख नहीं सकेंगे। वस्तुतः इसका सही मतलब ये है कि मेरा दर्शन आपको सहस्रार में होगा। बाइबल में अनेक जगह इसी तरह श्री कुण्डलिनी शक्ति व सहस्रार का उल्लेख है। किन्तु यहां यह सब बिलकुल संक्षेप में कह सकते हैं।

श्री येशु ख्रिस्त जी ने कहा है कि, 'जो मेरे

* मूल मराठी भाषण से अनुवादित।

विरोध में नहीं हैं वे मेरे साथ हैं।' इसका मतलब है कि जो लोग मेरे विरोध में नहीं हैं वे मेरे साथ हैं। आपने अगर ईसाई लोगों को पूछा कि ये लोग कौन थे तो उन्हें इसका पता नहीं है।

श्री येशु ख्रिस्त में दो महान शक्तियों का संयोग है। एक श्री गणेश की शक्ति जो येशु ख्रिस्त की मूल शक्ति मानी गयी है, और दूसरी शक्ति श्री कार्तिकेय की। इस कारण श्री येशु ख्रिस्त का स्वरूप सम्पूर्ण ब्रह्म तत्व, ॐकार रूप है। श्री येशु ख्रिस्त के पिताजी साक्षात श्री कृष्ण थे। इसलिए उन्होंने उन्हें जन्म से पूर्व ही अनेक वरदान दिये हुए थे। उसमें से एक वरदान है कि आप हमेशा मेरे स्थान से ऊपर स्थित होंगे। इसका स्पष्टीकरण ये है कि श्री कृष्ण का स्थान हमारी गर्दन पर जो विशुद्धी चक्र है उस पर है, और श्री ख्रिस्त का स्थान आज्ञा चक्र में है जो अपने सर के पिछले भाग में जहां दोनों आंखों की ज्योति ले जाने वाली नसें जहां परस्पर छेदती है वहां स्थित है।

दूसरा वरदान श्री कृष्ण ने ये दिया था कि आप सारे विश्व के आधार होंगे। तीसरा वरदान है कि, पूजा में मुझे जो भेंट प्राप्त होगा उसका १६वां हिस्सा सर्वप्रथम आपको दिया जाएगा। इस तरह अनेक वरदान देने के बाद श्री कृष्ण ने उन्हें अवतार लेने की अनुमति दी।

आपने अगर मार्कण्डेय पुराण पढ़ा होगा तो ये सारी बातें आप समझ सकते हैं क्योंकि श्री मार्कण्डेय जी ने ऐसी अनेक बातें जो सूक्ष्म हैं खोलकर कही हैं।

इसी पुराण में श्री महाविष्णु का भी वर्णन किया है। आप अगर ध्यान में जाकर यह वर्णन सुनेंगे तो आप समझ सकते हैं कि ये वर्णन श्री येशु ख्रिस्त का है।

अब अगर आपने श्री 'ख्रिस्त' शब्द का अध्ययन किया (उसे सूक्ष्मता से देखा) तो ये 'कृष्ण' शब्द के अपभ्रंश से निर्माण हुआ है। वस्तुतः श्री येशु ख्रिस्त के पिताजी श्री कृष्ण ही है और इसीलिए उन्हें 'ख्रिस्त' कहते हैं। उनका नाम 'जीसस' जिस प्रकार बना है वह भी मनोरंजक है। श्री यशोदा माता को 'येशु' नाम से कहा जाता था। उत्तर प्रदेश में अब भी किसी का नाम 'येशु' होता है तो उसे वैसे न कहकर "जेशू" कहते हैं। इस प्रकार ये स्पष्ट होता है कि, 'यशोदा से 'येशु' व उसके 'जशू' व उससे 'जीसस क्राईस्ट' नाम बना है।

जिस समय श्री ख्रिस्त अपने पिताजी की गाथाएं सुनाते थे उस समय वे वास्तव में श्री कृष्ण के बारे में बताते थे, 'विराट' की बातें बताते थे। यद्यपि श्री कृष्ण ने जीसस ख्रिस्त के जीवन काल में पुनः अवतार नहीं लिया था, तथापि जीसस ख्रिस्त के उपदेशों का सार था कि साधकों विराट पुरुष सर्वशक्तिमान परमात्मा का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं। अर्थात् श्री ख्रिस्त की माता साक्षात् श्री महालक्ष्मी थीं। श्री मेरी माता स्वयं श्री महालक्ष्मी व आदिशक्ति थीं। और अपनी मां को उन्होंने 'होली घोस्ट' (Holy Ghost) नाम से सम्बोधित करते थे। श्री ख्रिस्त जी के पास एकादश रुद्र की शक्तियां हैं, अर्थात् ग्यारह संहार शक्तियां हैं। इन शक्तियों के स्थान अपने माथे पर हैं। जिस समय शक्ति का अवतरण होता है उस समय ये सारी शक्तियां संहार का काम करती हैं। इन ग्यारह शक्तियों में एक शक्ति श्री हनुमान की है व दूसरी श्री भैरवनाथ की है। इन दोनों शक्तियों को बायबल में 'सेन्ट मायकेल' तथा 'सेन्ट गाब्रियल' कहा जाता है। सहजयोग में आकर पार होने के बाद आप इन शक्तियों को अंग्रेजी में बोलकर भी जागृत कर सकते हैं या मराठी में या संस्कृत में भी बोलकर जागृत कर सकते हैं। अपने दायें तरफ की (Right) नाड़ी

(पिंगला नाड़ी) में भी श्री हनुमान जी की शक्ति कार्यान्वित होती है। जिस समय अपनी पिंगला नाड़ी में अवरोध निर्माण होता है उस समय श्री हनुमान जी के मन्त्र से तुरन्त अन्तर पड़ता है। उसी प्रकार 'सेन्ट मायकेल' का मन्त्र बोलने से भी पिंगला नाड़ी में अन्तर आएगा। अपने बांये तरफ की नाड़ी, इड़ा नाड़ी 'सेन्ट गाब्रियल' या 'श्री भैरवनाथ' की शक्ति से कार्यान्वित होती है। उनके मन्त्र से इड़ा नाड़ी की तकलीफें दूर होती हैं।

ऊपर कही गयी बातों की सिद्धता सहजयोग में आकर पार होने के बाद किसी को भी आ सकती है। कहने का अभिप्राय है कि अपने आपको हिन्दू या मुसलमान या ईसाई ऐसे अलग-अलग समझ कर आपस में लड़ना मूर्खता है। अगर आप ने इसमें तत्व की बात जान ली तो आपके मस्तिष्क में आएगा कि ये सब एक ही धर्म के वृक्ष के अनेक फूल हैं व आपस में एक ही शक्ति से सम्बन्धित हैं।

आपको ये जानकर कदाचित् आश्चर्य होगा कि सहजयोग में कुण्डलिनी जागृति होना साधक के आज्ञा चक्र की अवस्था पर निर्भर करता है। आजकल लोगों में अहंकार बहुत ज्यादा है क्योंकि अनेक लोग अहंकारी प्रवृत्ति में खोये हैं। अहंकारी वृत्ति के कारण मनुष्य अपने सच्चे धर्म से विचलित हो जाते हैं और दिशाहारा (मार्ग से भटक जाना) होने के कारण वे अहंकार को बढ़ावा देने वाले कार्यों में रत रहते है। इस अहंकार से मुक्ति पाने के लिए येशु ख्रिस्त बहुत सहायक होते हैं।

जिस प्रकार भी मोहम्मद पैगम्बर ने दुष्ट शक्तियों का कैसे विनाश करना है इसके बारे में लिखा है उसी प्रकार श्री ख्रिस्त जी ने बहुत ही सरल तरीके से आप में कौन-कौन सी शक्तियां हैं व कौन से आयुध हैं इसके बारे में कहा है।

उन आयुधों में सर्वप्रथम 'क्षमा' करना है। जो तत्व श्री गणेश में 'परोक्ष' रूप में है वही तत्व मनुष्य में क्षमा के रूप में कार्यान्वित है। वस्तुतः क्षमा बहुत बड़ा आयुध है क्योंकि उससे मनुष्य अहंकार से बचता है। अगर हमें किसी ने दुःख दिया, परेशान किया या हमारा अपमान किया तो अपना मन बार बार यही बात सोचता रहता है और उद्विग्न रहता है। आप रात दिन उस मनुष्य के बारे में सोचते रहेंगे और बीती घटनाएं याद करके अपने आपको दुःख देते रहेंगे। इससे मुक्ति पाने के लिए सहजयोग में हम ऐसे मनुष्य को क्षमा करने के लिए कहते हैं। दूसरों को क्षमा करना, ये एक बड़ा आयुध, श्री ख्रिस्त के कारण हमें प्राप्त हुआ है जिससे आप दूसरों के कारण होने वाली परेशानियों से छुटकारा पा सकते हैं।

श्री ख्रिस्तजी के पास अनेक शक्तियां थीं और उसी में एकादश रुद्र स्थित है। इतनी सारी शक्तियां पास में होने पर भी उन्होंने अपने आपको क्रास (सूली) पर लटकवा लिया। उन्होंने अपने आपको क्यों नहीं बचाया? श्री ख्रिस्त जी के पास इतनी शक्तियां थीं कि वे उन्हें परेशान करने वालों का एक क्षण में हनन कर सकते थे। उनकी मां श्री मेरी माता साक्षात् श्री आदिशक्ति थीं। उस मां से अपने बेटे पर हुए अत्याचार देखे नहीं गए। परन्तु परमेश्वर को एक नाटक करना था। सच बात तो ये है कि श्री ख्रिस्त सुख या दुःख, इसमें फंसे हुए नहीं थे। उन्हें ये नाटक खेलना था। उनके लिए सब कुछ खेल था। वास्तव में जीसस ख्रिस्त सुख दुःख से परे थे। उन्हें तो यह नाटक अत्यन्त निपुणता से रचना था। जिन लोगों ने उन्हें सूली पर लटकाया वे कितने मूर्ख थे? उस जमाने के लोगों की मूर्खता को नष्ट करने के लिए श्री ख्रिस्त स्वयं गधे पर सवार हुए थे। आपके कभी सिर में दर्द हो तो आप कोई दवाई न लेकर, श्री ख्रिस्त की प्रार्थना करिए कि 'इस दुनिया में जिस किसी ने मुझे कष्ट दिया है, परेशान किया है उन सबको

माफ कीजिए' तो आपका सर दर्द तुरन्त समाप्त हो जायगा। लेकिन इसके लिए आपको सहजयोग में आकर कुण्डलिनी जागृत करवा कर पार होना आवश्यक है। उसका कारण है कि आज्ञा चक्र, जो आपमें श्री ख्रिस्त तत्व है वह सहजयोग के माध्यम से कुण्डलिनी जागृति के पश्चात ही सक्रिय होता है, उसके बिना नहीं।

ये चक्र इतना सूक्ष्म है कि डाक्टर भी इसे देख नहीं सकते। इस चक्र पर एक अतिसूक्ष्म द्वार है। इसीलिए श्री ख्रिस्त ने कहा है कि "मैं द्वार हूँ" इस अतिसूक्ष्म द्वार को पार करना आसान करने के लिए श्री ख्रिस्त ने इस पृथ्वी पर अवतार लिया और स्वयं यह द्वार प्रथम पार किया। अपने अहंभाव के कारण लोगों ने श्री ख्रिस्त को सूली पर चढ़ाया, क्योंकि कोई मनुष्य परमेश्वर का अवतार बनकर आ सकता है ये उनकी बुद्धि को मान्य नहीं था। उन्होंने अपने बौद्धिक अहंकार के कारण सत्य को ठुकराया। श्री ख्रिस्त ने ऐसा कौन सा अपराध किया कि जिससे उनको सूली पर लटकाया? उलटे उन्होंने दुनिया के कितने लोगों को अपनी शक्ति से ठीक किया। जग में सत्य का प्रचार किया। लोगों को अनेक अच्छी बातें सिखायीं। लोगों को सुव्यवस्थित, सुसंस्कृत जीवन सिखाया। वे हमेशा प्यार की बातें करते थे। लोगों के लिए हमेशा अच्छाई करते हुए भी आपने उन्हें दुःख दिया, परेशान किया। जो लोग आपको गन्दी बातें सिखाते हैं या मूर्ख बनाते हैं उनके आप पाँव छूते हैं। मूर्खता की हद है! आजकल कोई भी ऐरे-गैरे गुरू बनते हैं, लोगों को ठगते हैं, लोगों से पैसे लूटते हैं। उनकी लोग वाह वाह (खुशामद, प्रशंसा) करते हैं। कोई सत्य बात कहकर लोगों को सच्चा मार्ग दिखाएगा तो उसकी कोई सुनता नहीं, उल्टे उसी पर गुस्सा करेंगे। ऐसे महामूर्ख लोगों को ठीक करने के लिए परमात्मा ने अपना सुपुत्र श्री ख्रिस्त को इस दुनिया में भेजा था। पर उन्हें लोगों ने सूली पर चढ़ाया। ऐसे ही नाना प्रकार के लोग करते रहते हैं।

आप इतिहास पढ़ेंगे तो आप देखेंगे कि जब-जब परमेश्वर ने अवतरण लिया या सन्त-महात्माओं ने अवतरण लिया तब-तब लोगों ने उन्हें कष्ट दिया है। उनसे कुछ सीखने के बजाय खुद मूर्खों की तरह बर्ताव करते थे। महाराष्ट्र के सन्त श्रेष्ठ श्री तुकाराम महाराज या श्री ज्ञानेश्वर महाराज इनके साथ यही हुआ। वैसे ही श्री गुरुनानक, श्री मोहम्मद साहब इनके साथ भी उसी प्रकार हुआ।

मनुष्य हमेशा सत्य से दूर भागता है और असत्य से चिपका रहता है।

जब कोई साधु-सन्त या परमेश्वर का अवतरण होता है तब अगर ऐसा प्रश्न पूछा जाय कि यह व्यक्ति क्या अवतारी, सन्त या पवित्र है? तो सहज-योग में लोगों द्वारा ऐसा सवाल पूछते ही तुरन्त एक सहजयोगी के हाथ पर ठंडी लहरें आकर आप के प्रश्न का 'हां' में उत्तर मिलेगा। विगत (भूत काल की) बातों से मनुष्य का अहंकार बढ़ता है। उदाहरणतः किसी विशेष व्यक्ति का शिष्य होने का दंभ।

जो सामने प्रत्यक्ष है उसका मनुष्य को ज्ञान नहीं होता है। बढ़े हुए अहंकार के कारण मनुष्य 'स्व' (आत्मा) के सच्चे अर्थ को भूल जाता है। अब देखिए, 'स्वार्थ' माने 'स्व' का अर्थ समझ लेना जरूरी है। आज गंगा जिस जगह बह रही है, और अगर आप किसी दूसरी जगह जाकर बैठ जाएं और कहने लगें कि गंगा इधर से बह रही है और हम गंगा के किनारे बैठे हैं, तो ये जिस तरह हास्यजनक होगा उसी तरह ये बात है। आपके सामने आज जो साक्षात है उसी को स्वीकार कीजिए। श्री ख्रिस्त के समय भी इसी तरह की

स्थिति थी। उस समय श्री ख्रिस्त जी ने कुण्डलिनी जागरण के अनेक यत्न किये। परन्तु महा मुश्किल से केवल २१ व्यक्ति पार हुए। सहजयोग में हजारों पार हुए हैं। श्री ख्रिस्त उस समय बहुतों को पार करा सकते थे परन्तु उनके शिष्यों ने सोचा श्री ख्रिस्त केवल बीमार लोगों को ठीक करते हैं। उसके अतिरिक्त कुछ है इसका उन्हें ज्ञान नहीं था। इसलिए उनके सारे शिष्य सभी तरह के बीमार लोगों को उनके पास ले जाते थे। श्री ख्रिस्त ने बहुत बार पानी पर चलकर दिखाया क्योंकि वे स्वयं प्रणव थे। ॐकार रूपी थे। इतना सब कुछ था तब भी लोगों के दिमाग में नहीं आया कि श्री ख्रिस्त परमेश्वर के सुपुत्र थे। मुश्किल से उन्होंने कुछ मछुआरों को इकट्ठा करके (क्योंकि, और कोई लोग उनके साथ आने के लिए तैयार नहीं थे) बड़ी मुश्किल से उन्होंने उन लोगों को पार किया। पार होने के बाद ये लोग श्री ख्रिस्त के पास किसी न किसी बीमार को ठीक कराने ले आते थे। हमारे यहां सहजयोग में भी बहुत से बीमार लोग पार होकर ठीक हुए हैं। लोगों को जान लेना चाहिए कि अहंकार बहुत ही सूक्ष्म है।

अब दूसरा प्रकार ये है कि अपने अहंकार के साथ लड़ना भी ठीक नहीं है। अहंकार से लड़ने से वह नष्ट नहीं होता है। वह अपने आप ('स्व') में समाना चाहिए। जिस समय अपना चित्त कुण्डलिनी पर केन्द्रित होता है व कुण्डलिनी अपने ब्रह्मरन्ध्र को छेदकर विराट में मिलती है उस समय अहंकार का विलय होता है। विराट शक्ति का अहंकार ही सच्चा अहंकार है। वास्तव में विराट ही वास्तविक अहंकार है। आपका अहंकार छूटता नहीं। आप जो करते हैं वह अहंकार है। अहंकरोति सः अहंकारः। आप अपने आप से पूछकर देखिए कि आप क्या करते हैं। किसी मृत वस्तु का आकार बदलने के सिवा आप क्या कर सकते हैं? किसी फूल से आप फल बना सकते हैं? ये नाक, ये मुंह, ये सुन्दर मनुष्य शरीर आपको प्राप्त हुआ है। ये कैसे हुआ है? आप अमीबा से मनुष्य स्थिति को प्राप्त हुए हैं। ये कैसे हुआ है? परमेश्वर की असीम कृपा कि आपको ये सुन्दर मनुष्य देह प्राप्त हुआ है। क्या मानव इसका बदला चुका सकता है? आप ऐसा कोई जीवन्त कार्य कर सकते हैं क्या? एक टेस्ट ट्यूब बेबी के निर्माण के बाद मनुष्य में इतने बड़े अहंकार का निर्माण हुआ है। उसमें भी वस्तुतः ये कार्य जीवन्त कार्य नहीं हैं। क्योंकि जिस प्रकार आप किसी पेड़ का cross breeding करते हैं, उसी प्रकार किसी जगह से एक जीवन्त जीव लेकर यह क्रिया की है। परन्तु इस बात का भी मनुष्य को कितना अहंकार है! चाँद पर पहुँच गए तो कितना अहंकार। जिसने चांद-सूरज की तरह अनेक ग्रह बनाए व ये सृष्टि बनायी उनके सामने क्या आपका अहंकार? वास्तव में आपका अहंकार दाम्भिक है, झूठा है। उस विराट पुरुष का अहंकार सत्य है क्योंकि वही सब कुछ करता है।

विराट पुरुष ही सब कुछ कर रहा है, ये समझ लेना चाहिए। तो श्री विराट पुरुष को ही सब कुछ करने दीजिए। आप एक यंत्र की तरह हैं। समझ लीजिए मैं किसी माईक में से बोल रही हूँ व माईक में से मेरा बोला हुआ आप तक बह रहा है। माईक केवल साक्षी (माध्यम) है परन्तु बोलने का कार्य मैं कर रही हूँ व वह शक्ति माइक से बह रही है। उसी भाँति आप एक परमेश्वर के यन्त्र हैं। उस विराट ने आपको बनाया है। तो उस विराट की शक्ति को आप में से बहने दो। उस 'स्व' का मतलब समझ लीजिए। यह मतलब समझने के लिए आज्ञा चक्र, जो बहुत ही मुश्किल चक्र है और जिस पर अति सूक्ष्म तत्व ॐ कार, प्रणव स्थित है, वही अर्थात श्री ख्रिस्त इस दुनिया में अवतरित हुए थे। अब कुण्डलिनी और श्री ख्रिस्त का सम्बन्ध जैसे सूर्य का सूर्य किरण से जो सम्बन्ध है, उसी तरह है, अथवा चन्द्र का चन्द्रिका से जो सम्बन्ध है उसी प्रकार है।

श्री कुण्डलिनी ने, माने श्री गौरी माता ने अपनी शक्ति से, तपस्या से, मनोबल से व पुण्याई से श्री गणेश का निर्माण किया। जिस समय श्री गणेश स्वयं अवतरण लेने के लिए सिद्ध हुए उस समय श्री ख्रिस्त का जन्म हुआ।

इस संसार में ऐसी अनेक घटनाएं घटित होती हैं जो मनुष्य को अभी तक मालूम नहीं। क्या आप ये विचार करते हैं कि एक बीज में अंकुर का निर्माण कैसे होता है? आप श्वास कैसे लेते हैं? अपना चलन-वलन (movement, action) कैसे होता है? अपने मस्तिष्क में कहाँ से शक्ति आती है? आप इस संसार में कैसे आए हैं? ऐसी अनेक बातें हैं। क्या मनुष्य इन सबका अर्थ समझ सकता है? आप कहते हैं पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण की शक्ति है। लेकिन यह कहां से आयी है? आपको ऐसी बहुत सी बातें अभी तक मालूम नहीं हैं। आप भ्रम में हैं और इस भ्रम को हटाना जरूरी है। जब तक आपका भ्रम नहीं नष्ट होगा तब तक आपमें वह बढ़ता ही जाएगा। इस संसार में मनुष्य की उत्क्रान्ति के लिए उसके भ्रम का नष्ट होना जरूरी है। जिस समय मनुष्य ने या और किसी भी जीव ने उत्क्रान्ति के लिए यत्न किए तब इस संसार में अवतरण हुए हैं। आपको मालूम है कि श्री विष्णु श्री राम अवतार लेकर जंगलों में घूमते थे। जिससे मनुष्य ये जान ले कि एक आदर्श राजा को कैसा होना चाहिए। इस लिए एक सुन्दर नाटक उन्होंने प्रदर्शित किया। इसी प्रकार श्री कृष्ण का जीवन था। और इसी तरह श्री येशु ख्रिस्त का जीवन था।

श्री ख्रिस्त के जीवन की तरफ ध्यान दिया जाय तो एक बात दिखाई देती है। वह है उस समय के लोगों की महामूर्खता, जिसके कारण इस महान व्यक्ति को सूली पर (फांसी पर) चढ़ाया गया। इतनी मूर्खता कि "एक चोर को छोड़ दिया जाए या श्री ख्रिस्त को?" ऐसा लोगों से सवाल किया गया तो वहां के यहूदी लोगों ने श्री ख्रिस्त को फांसी दी जाय यह मांग की। आज इन्हीं लोगों की क्या स्थिति है, ये आप जानते हैं। उन्होंने जो पाप किया है वह अनेक जन्मों में नहीं धुलने वाला। अभी भी ऐसे लोग अहंकार में डूबे हुए हैं। उन्हें लगता है, हमने बहुत बड़ा पुण्य कर्म किया है। अभी भी यदि उन लोगों ने परमेश्वर से क्षमा मांगी कि "हे परमात्मा, आपके पवित्र तत्व को फांसी देने के अपराध के कारण हमें आप क्षमा कीजिए। हमने आपका पवित्र तत्व नष्ट किया इसके लिए हमें माफ कीजिए" तो परमात्मा लोगों को तुरन्त माफ कर देंगे। परन्तु मनुष्य को क्षमा मांगना बड़ी कठिन बात लगती है। वह अनेक दुष्टता करता है। दुनिया में ऐसे कितने लोग हैं जिन्होंने सन्तों का पूजन किया है। आप श्री कबीर या श्री गुरुनानक की बात लीजिए। हर पल लोगों ने उन्हें सताया। इस दुनिया में लोगों ने आज तक हर एक सन्त को दुःख के सिवाय कुछ नहीं दिया। परन्तु अब मैं कहना चाहती हूँ कि अब दुनिया बदल चुकी है। सत्ययुग का आरम्भ हो गया है। आप कोशिश कर सकते हैं, पर अब आप किसी भी सन्त-साधु को नहीं सता पाएंगे। इसका कारण श्री ख्रिस्त हैं। श्री ख्रिस्त ने दुनिया में बहुत बड़ी शक्ति संचारित की है, जिससे साधु-सन्त लोगों को परेशान करने वालों को कष्ट भुगतने पड़ेंगे। उन्हें सजा होगी। श्री ख्रिस्त के एकादश रुद्र आज पूर्णतया सिद्ध है। और इसलिए जो कोई साधु-सन्तों को सताएगा उनका सर्वनाश होगा। किसी भी महात्मा को सताना ये महापाप है। आप श्री येशु ख्रिस्त के उदाहरण द्वारा समझ लीजिए। इस प्रकार की मूर्खता मत कीजिए। अगर इस तरह की मूर्खता आपने फिर से की तो आपका हमेशा के लिए सर्व-नाश होगा।

श्री ख्रिस्त के जीवन से सीखने की एक बहुत बड़ी बात है। वह है "जैसे राखहू वैसे ही रहहूँ"

उन्होंने अपना ध्येय कभी नहीं बदला। उन्होंने अपने आपको संन्यासी समझ कर अपने को समाज से अलग नहीं किया। उलटे वे शादी-ब्याहों में गये। वहां उन्होंने स्वयं शादियों की व्यवस्था की। बायबिल में लिखा है कि एक विवाह में एक बार उन्होंने पानी से अंगूर का रस निर्माण किया। ऐसा वर्णन बायबल में है। अब मनुष्य ने केवल यही मतलब निकाला कि श्री ख्रिस्त ने पानी से शराब बनायी, अतः वह शराब पिया करते थे। आपने अगर हिब्रू भाषा का अध्ययन किया तो आपको मालूम होगा कि 'वाइन' माने शुद्ध ताजे अंगूर का रस। उसका अर्थ दारू नहीं है।

श्री ख्रिस्त का कार्य था आपके आज्ञा चक्र को खोलकर आपके अहंकार को नष्ट करना। मेरा कार्य है आप की कुण्डलिनी शक्ति का जागरण करके आपके सहस्रार का उसके (कुण्डलिनी शक्ति) द्वारा छेदन करना। ये समग्रता का कार्य होने के कारण हर-एक के लिए मुझे ये करना है। मुझे समग्रता में श्री ख्रिस्त, श्री गुरुनानक, श्री जनक व ऐसे अनेक अवतरणों के बारे में कहना है। उसी प्रकार मुझे श्री कृष्ण, श्री राम, इन अवतारों के बारे में भी कहना है। उसी प्रकार श्री शिवजी के बारे में भी, क्योंकि इन सभी देव-देवताओं की शक्ति आप में है। अब समग्रता (सामूहिक चेतना) घटित होने का समय आया है।

कलियुग में जो कोई परमेश्वर को खोज रहे हैं उन्हें परमेश्वर प्राप्ति होने वाली है। और लाखों की संख्या में लोगों को यह प्राप्ति होगी। इसका सर्व न्याय भी कलियुग में होने वाला है। सहजयोग ही आखिरी न्याय (Last Judgment) है।

इसके बारे में बायबल में वर्णन है। सहजयोग में आने के बाद आपका न्याय (Judgment) होगा। परन्तु आपको सहजयोग में आने के बाद समर्पित होना बहुत जरूरी है। क्योंकि, सब कुछ प्राप्त होने के बाद उसमें टिककर रहना व जमकर रहना, उसमें स्थिर होना, ये बहुत महत्वपूर्ण है। बहुत लोग हमें पूछते हैं, माताजी हम स्थिर कब होंगे ? ये सवाल ऐसा है कि, समझ लीजिए आप किसी नाव में बैठकर जा रहे हैं। नाव स्थिर हुई कि नहीं, ये आप जानते हैं। या ऐसा समझ लीजिए आप साईकिल चला रहे हैं। वह चलाते समय जब आप डगमगाते नहीं हैं कि आप का सन्तुलन हो गया व आप जम गए। ये जिस प्रकार आपकी समझ में आता है उसी प्रकार सहजयोग में आकर स्थिर हो गए हैं, ये स्वयं आपकी समझ में आता है। यह निर्णय अपने आप ही करना है। जिस समय सहजयोग में आप स्थिर होते हैं उस समय निर्विकल्पता प्रस्थापित होती है। जब तक कुण्डलिनी शक्ति आज्ञा चक्र को पार नहीं कर जाती तब तक निर्विचार स्थिति प्राप्त नहीं होती। साधक में निर्विचारिता प्राप्त होना, साधना की पहली सीढ़ी है। जिस समय कुण्डलिनी शक्ति आज्ञा चक्र को पार करती है, उस समय निर्विचारिता स्थापित होती है। आज्ञा चक्र के ऊपर स्थित सूक्ष्म द्वार येशु ख्रिस्त की शक्ति से ही कुण्डलिनी शक्ति के लिए खोला जाता है और ये द्वार खोलने के लिए श्री ख्रिस्त की प्रार्थना 'दी लार्डस् प्रेअर' बोलनी पड़ती है। ये द्वार पार करने के बाद कुण्डलिनी शक्ति अपने मस्तिष्क में जो तालू स्थान (limbic area) है उसमें प्रवेश करती है। उसीको परमात्मा का साम्राज्य कहते हैं। कुण्डलिनी जब इस राज्य में प्रवेश करती है तब ही निर्विचार स्थिति प्राप्त होती है। इस मस्तिष्क के limbic area में वे चक्र हैं जो शरीर के सात मुख्य चक्र व और अन्य उप-चक्रों को संचालित करते हैं।

अब आज्ञा चक्र किन कारण से खराब होता हैं वह देखते हैं। आज्ञा चक्र खराब होने का मुख्य कारण आंखें हैं। मनुष्य को अपनी आंखों का बहुत ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि उनका बड़ा महत्व

है। अनधिकृत गुरू के सामने झुकने अथवा उनके चरणों में अपना माथा टेकने से भी आज्ञा चक्र खराब हो जाता है। इसी कारण जीसस क्रिस्त ने अपना माथा चाहे जिस आदमी या स्थान के सामने झुकाने को मना किया है। ऐसा करने से हमने जो कुछ पाया है वह सब नष्ट हो जाता है। केवल परमेश्वरी अवतार के आगे ही अपना माथा टेकना चाहिए। दूसरे किसी भी व्यक्ति के आगे अपने माथे को झुकाना ठीक नहीं है। किसी गलत स्थान के सम्मुख भी अपना माथा नहीं झुकाना चाहिए। ये बात बहुत ही महत्वपूर्ण है। आपने अपना माथा गलत जगह पर या गलत आदमी के सामने झुकाया तो तुरन्त आपका आज्ञा चक्र पकड़ा जाएगा। सहजयोग में हमें दिखाई देता है, आजकल बहुत ही लोगों के आज्ञा चक्र खराब हैं। इसका कारण है लोग गलत जगह माथा टेकते हैं या गलत गुरू को मानते हैं। आंखों के अनेक रोग इसी कारण से होते हैं।

ये चक्र स्वच्छ रखने के लिए मनुष्य को हमेशा अच्छे पवित्र धर्म ग्रन्थ पढ़ना चाहिए। अपवित्र साहित्य बिलकुल नहीं पढ़ना चाहिये। बहुत से लोग कहते हैं "इसमें क्या हुआ ? हमारा तो काम ही इस ढंग का है कि हमें ऐसे अनेक काम करने पड़ते हैं जो पूर्णतः सही नहीं हैं।" परन्तु ऐसे अपवित्र कार्यों के कारण आंखें खराब हो जाती हैं। मेरी ये समझ में नहीं आता कि जो बातें खराब हैं वह मनुष्य क्यों करता है ? किसी अपवित्र व गन्दे मनुष्य को देखने से भी आज्ञा चक्र खराब हो सकता है। श्री क्रिस्त ने बहुत ही जोर से कहा था कि, आप व्यभिचार मत कीजिए। परन्तु मैं आपसे कहती हूं कि आप की नजर भी व्यभिचारी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने इतने बलपूर्वक कहा था कि आपकी अगर नजर अपवित्र होगी तो आपको आँखों की तकलीफें होंगी। इसका मतलब ये नहीं कि अगर आप चश्मा पहनते हैं तो आप अपवित्र गलत व्यक्ति हैं। किसी एक उम्र के बाद चश्मा लगाना पड़ता है। ये जीवन की आवश्यकता है। परन्तु आंखें खराब होती हैं ये अपनी नजर स्थिर न रखने के कारण। बहुत लोगों का चित्त बार बार इधर-उधर दौड़ता रहता है। ऐसे लोगों को समझ नहीं कि अपनी आँखें इस प्रकार इधर-उधर घुमाने के कारण ये खराब होती है। आज्ञा चक्र खराब होने का दूसरा कारण है मनुष्य की कार्य पद्धति। समझ लीजिए आप बहुत काम करते हैं, अति कर्मी हैं। अच्छे काम करते हैं। कोई भी बुरा काम नहीं करते। परन्तु ऐसी अति कार्यशीलता की वजह से, फिर वह अति पढ़ना, अति सिलाई हो या अति अध्ययन हो या अति विचारशीलता हो। इसका कारण है कि जिस समय आप अति कार्य करते हैं उस समय आप परमात्मा को भूल जाते हैं। उस समय अपने में ईश्वर प्रणिधान स्थित नहीं होता।

कुण्डलिनी सत्य है। यह पवित्र है। ये कोई ढोंगबाजी या दुकान में मिलने वाली चीज नहीं है। ये नितान्त (Absolute) सत्य है। जब तक आप सत्य में नहीं उतरेंगे, तब तक आप ये जान नहीं सकते। वाम मार्ग (गलत मार्ग) का अवलम्बन करके आप सत्य को नहीं पहचान सकते। जिस समय आप सत्य से एकाकार होंगे, तब ही आप जान सकते हैं कि सत्य क्या है, उसी समय आप समझेंगे कि हम परम पिता परमेश्वर के एक साधन हैं, जिसमें से परमेश्वरी शक्ति का वहन (प्रवाह) हो रहा है, जो परमेश्वरी शक्ति सारे विश्व में फैली हुई है, जो सारे विश्व का संचालन करती है। उसी परमेश्वरी प्रेम शक्ति के आप साधन हैं। इसमें श्री खिस्त का कितना बड़ा बलिदान है ? क्योंकि उन्हीं के कारण आपका आज्ञा चक्र खुला है। अगर आज्ञा चक्र नहीं खुला तो कुण्डलिनी का उत्थान नहीं हो सकता, क्योंकि जिस मनुष्य का आज्ञा चक्र पकड़ता है उसका

मूलाधार चक्र भी पकड़ा जाता है। किसी मनुष्य का आज्ञा चक्र बहुत ही ज्यादा पकड़ा होगा तो उनकी कुण्डलिनी शक्ति जागृत नहीं होगी। आज्ञा चक्र की पकड़ छुड़वाने के लिए हम कुंकुम लगाते हैं। उससे अहंकार व आपकी अनेक विपत्तियां दूर होती हैं। जब आपके आज्ञा चक्र पर कुंकुम लगाया जाता है तब आपका आज्ञा चक्र खुलता है व कुण्डलिनी शक्ति ऊपर जाती है। इतना गहन सम्बन्ध श्री ख्रिस्त व कुण्डलिनी शक्ति का है। जो श्री गणेश, मूलाधार चक्र पर स्थित रहकर आपकी कुण्डलिनी शक्ति की लज्जा का रक्षण करते हैं वही श्री गणेश आज्ञा चक्र पर उस कुण्डलिनी शक्ति का द्वार खोलते हैं।

यह चक्र ठीक रखने के लिए आपको क्या करना चाहिए? उसके लिए अनेक मार्ग हैं। किसी भी अतिशयता के कारण समाज दूषित होता है। और इसीलिए किसी भी प्रकार की अतिशयता अनुचित है। संतुलितता से अपनी आंखों को विश्राम मिलता है। सहजयोग में इसके लिए अनेक उपचार हैं। परन्तु इसके लिए पहले पार होना आवश्यक है। उसके बाद आँखों के लिए अनेक प्रकार के व्यायाम है जिससे आपका आज्ञा चक्र ठीक रह सकता है। इसमें एक है अपना अहंकार देखते रहना और अपने आपसे कहना "क्यों। क्या विचार चल रहा है? कहां जा रहे हो?" जैसे कि आप आइने में अपने आपको देख रहे हैं। उससे अहंकार से आँखों पर आने वाला तनाव (tension) कम हो जाता है।

इसका महत्वपूर्ण इलाका (क्षेत्र, अंचल) सिर के पिछले भाग का वह स्थल है जो माथे (भाल) के ठीक पीछे स्थित है। यह उस क्षेत्र में स्थित है जो गर्दन के आधार (back of the neck) से आठ उंगलियों की मोटाई (लगभग पांच इंच) की ऊंचाई पर स्थित है। यह 'महागणेश' का अंचल (इलाका) है। श्री गणेश ने 'महागणेश' के रूप में अवतार लिया और वही अवतार जीसस ख्रिस्त का है। श्री ख्रिस्त का स्थान कपाल (खोपड़ी) के केन्द्र (मध्य) भाग में है और इसके चारों ओर एकादश रुद्र का साम्राज्य है। जीसस ख्रिस्त इस साम्राज्य के स्वामी हैं। श्री महागणेश और षटानन इन्हीं एकादश रुद्रों में से हैं। कुण्डलिनी जागृत होने के पश्चात यदि आप आंख खोलें तो अनुभव करेंगे कि आपकी आंखों की दृष्टि कुछ धुंधली हो गई है। इसका कारण यह है कि जब कुण्डलिनी जागृत होती है तब आपकी आंखों की पुतलियाँ कुछ फैल जाती हैं और शीतल हो जाती हैं। यह para-sympathetic nervous system (सुषुम्ना नाड़ी) के कार्य के फलस्वरूप होता है। जीसस ख्रिस्त के बारे में केवल सोचने से अथवा चिन्तन, मनन करने से आज्ञा चक्र को चैन प्राप्त होता है। साथ ही यह भी समझ लेना चाहिये कि जीसस ख्रिस्त के जीवन पश्चात निर्मित मिथ्या आचार-विचार या उत्तराधिकारियों की शृंखलाओं का अनुसरण जीसस ख्रिस्त का मनन-चिन्तन नहीं है।

अब जो कुछ सनातन सत्य है वह मैं आपको बताऊंगी। सर्वप्रथम किसी भी स्त्री की तरफ बुरी दृष्टि से देखना महापाप है। आप ही सोचिए जो लोग रात दिन रास्ते चलते स्त्रियों की तरफ बुरी नजरों से देखते हैं वे कितना महापाप कर रहे हैं? श्री ख्रिस्त ने ये बातें २००० साल पहले आपको कही हैं। परन्तु उन्होंने ये बातें खुलकर नहीं कही थी और इसीलिए यही बातें मैं फिर से आपसे कह रही हूँ। श्री ख्रिस्त ने ये बातें आपसे कहीं तो आपने उन्हें फांसी पर चढ़ाया। श्री ख्रिस्त ने इतना ही कहा था कि ये बातें न करें, क्योंकि ये बातें गन्दी हैं। परन्तु ये करने से क्या होता है ये उन्होंने नहीं कहा था। गलत नजर रखने से उसके दुष्परिणाम क्या होते हैं, इसके बारे में उन्होंने कहा है। मनुष्य किसी पशु समान बर्ताव करता है क्योंकि रात दिन उसके मन में गन्दे विचारों का चक्र चलता रहता है।

इसी कारण अपने योग शास्त्र में लिखा है अपनी चित्तवृत्ति को संभालकर रखिए और चित्त को सही मार्ग पर रखिए। अपना चित्त ईश्वर के प्रति नतमस्तक रखना चाहिए। हमें योग से बनाया गया है। हमारी भूमि योग भूमि है। हम अहंकारवादी नहीं हैं या हमारे में अहंकार आने वाला भी नहीं है। हमें अहंकारवादिता नहीं चाहिए। हमें इस भूमि पर योगी की तरह रहना है। एक दिन ऐसा आएगा जब हम सभी को योग प्राप्त होगा। उस समय सारी दुनिया इस देश के चरणों में झुकेगी। उस समय लोग जान जाएंगे श्री ख्रिस्त कौन थे, कहाँ से आए थे, और उनका इस भूमि पर यथा-चित पूजन होगा। अपनी पवित्र भारत भूमि पर आज भी नारी की लज्जा का रक्षण होता है और उन्हें सम्मान दिया जाता है। अपने देश में हम अपनी मां को मान देते हैं। अन्य देशों के लोग जब भारत में आएंगे तब वे देखेंगे कि श्री ख्रिस्त का सच्चा धर्म वास्तव में भारत में अत्यन्त आदर पूर्वक पालन किया जा रहा है, ईसाई धर्मानुयायी राष्ट्रों में नहीं।

श्री ख्रिस्त ने कहा कि अपना दोबारा जन्म होना चाहिए या आपको द्विज होना पड़ेगा। मनुष्य का दूसरा जन्म केवल कुण्डलिनी जागृति से ही हो सकता है। जब तक किसी की कुण्डलिनी जागृत नहीं होगी तब तक वह दूसरे जन्म को प्राप्त नहीं होगा। और जब तक आपका दूसरा जन्म नहीं होगा तब तक आप परमेश्वर को पहचान नहीं सकते। आप लोग पार होने के बाद बायबल पढ़िए। आपको आश्चर्य होगा कि उस में ख्रिस्तजी ने सहजयोग की महत्ता कही है, उसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं। एक एक बात इतनी सूक्ष्मता में बताई है। परन्तु जिन लोगों को वह दृष्टि प्राप्त नहीं है वे इन सभी बातों को उल्टा स्वरूप दे रहे हैं। (मनमाने ढंग से उसकी व्याख्या कर रहे हैं।)

वास्तव में बाप्तिज्म (Baptism) देने का अर्थ है कुण्डलिनी शक्ति को जागृत करना और उसके बाद उसे सहस्रार तक लाना, तदनन्तर सहस्रार का छेदन कर परमेश्वरी शक्ति और अपनी कुण्डलिनी शक्ति का संयोग घटित करना। यही कुण्डलिनी शक्ति का आखरी कार्य है। परन्तु इन पादरियों को बाप्तिज्म की जरा भी कल्पना नहीं है। उल्टे वे अनाधिकार चेष्टा करते हैं, या फिर ऐसे ये पादरी भूत कामों में लगे हुए हैं। गरीबों की सेवा करो, बीमारों की सेवा करो वगैरा। आप कहेंगे माताजी ये तो अच्छे हैं। हां, ये अच्छा है, परन्तु ये परमात्मा का कार्य नहीं है। परमात्मा का ये कार्य नहीं है कि पैसे देकर गरीबों की सेवा करें। परमेश्वर का कार्य है आपको उनके साम्राज्य में ले जाना और उनसे भेंट कराना। आपको सुख, शान्ति, समृद्धि, शोभा व ऐश्वर्य इन सभी बातों से परिपूर्ण करना, यही परमेश्वर का कार्य है। कोई मनुष्य चोरी करता है या झूठ बोलता है या गरीब बनकर घूमता है, परमात्मा ऐसे मनुष्य के पांव नहीं पकड़ेंगे। ये सेवा का काम है, जो कोई भी मनुष्य कर सकता है। कुछ ख्रिश्चन लोग धर्मान्तर करने का काम करते हैं। जहाँ कुछ आदिवासी लोग होंगे वहां वे (ख्रिश्चन लोग) जाएंगे। वहाँ कुछ सेवा का काम करेंगे। फिर सब को ख्रिश्चन बनाएंगे। परन्तु एक बात समझना चाहिए कि ये परमात्मा का काम नहीं है। परमात्मा का कार्य अबाधित है।

सहजयोग में लोगों की कुण्डलिनी जागृत करते ही लोग ठीक हो जाते हैं। हम सहजयोग में दिखावटी दयालुता का काम नहीं करते। परन्तु अगर हम किसी अस्पताल में गए तो २५-३० बीमार को सहज (आसानी से) स्वस्थ कर सकते हैं। उनकी कुण्डलिनी जागृत करते ही वे अपने आप स्वस्थ हो जाते हैं। श्री ख्रिस्त ने उनमें बह रही उसी प्रेमशक्ति के द्वारा अनेक लोगों को स्वस्थ किया। श्री ख्रिस्त ने कभी किसी की भौतिक वस्तुओं से सहायता नहीं

को। ये सब बातें आपको सुज्ञता (सूक्ष्मता) से समझ लेना आवश्यक है। पहले की गयी गलतियों की पुनरावृत्ति मत कीजिए। आप स्वयं साक्षात्कार प्राप्त कीजिए। ये आपका प्रथम कार्य है। आत्म-साक्षात्कार के बाद आपकी शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं। इन जागृत शक्तियों से सहजयोग में कर्क रोग (कैन्सर) जैसी असाध्य बीमारियाँ ठीक हुई हैं। आप किसी को भी रोग मुक्त करा सकते हैं। कैन्सर जैसी असाध्य बीमारियाँ केवल सहजयोग से ही ठीक हो सकती हैं। परन्तु लोग ठीक होने के बाद फिर से अपने पहले मार्ग और आदतों पर चले जाते हैं। ऐसे लोग परमात्मा को नहीं खोजते। उन्हें अपनी बीमारी ठीक कराने के लिए परमेश्वर की याद आती है। अन्यथा उन्हें परमात्मा को खोजने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। जो मनुष्य परमात्मा का दीप बनना नहीं चाहते, उन्हें परमात्मा क्यों ठीक करे? ऐसे लोगों को ठीक किया या नहीं किया, उन से दुनिया को प्रकाश नहीं मिलने वाला। परमात्मा ऐसे दीप जलाएंगे जिनसे सारी दुनिया प्रकाशमय हो जाएगी। परमात्मा मूर्ख लोगों को क्यों ठीक करेंगे। जिन लोगों में परमेश्वर प्रीति की इच्छा नहीं, परमेश्वर का कार्य करने की इच्छा नहीं, ऐसे लोगों को परमात्मा क्यों सहायता करें? गरीबी दूर करना अथवा अन्य सामाजिक कार्यों को ईश्वरीय कार्य नहीं समझना चाहिए।

कुछ लोग इतने निम्न स्तर पर परमेश्वर का सम्बन्ध जोड़ते हैं कि एक जगह दुकान पर 'साईंनाथ बीड़ी' लिखा हुआ था। यह परमेश्वर का मजाक उड़ाना, परमात्मा का सरासर अपमान करना है। सभी बातों में मर्यादा होनी चाहिए। हर-एक बात परमात्मा से जोड़कर आप महापाप करते हैं, ये समझ लीजिए। 'साईंनाथ बीड़ी' या 'लक्ष्मी हींग', ये परमात्मा का मजाक उड़ाना हुआ। ऐसा करने से लोगों को क्या लाभ होता है? कुछ लोग कहते हैं 'माताजी' इससे हमारा 'शुभ हुआ है'। शुभ का मतलब है ज्यादा पैसे प्राप्त हुए। इस तरह से धन्धा करने से कष्ट होगा। इससे परमात्मा का अपमान होता है।

श्री ख्रिस्त ने सारी मनुष्य जाति के कल्याणार्थ व उद्धारार्थ जन्म लिया था। वे किसी जाति या समुदाय की निजी सम्पदा नहीं थे। वे स्वयं ॐकार रूपी प्रणव थे। सत्य थे। परमेश्वर के अन्य जो अवतरण हुए उनके शरीर पृथ्वी तत्व से बनाये गये थे। परन्तु श्री ख्रिस्त का शरीर आत्म तत्व से बना था। और इसीलिए मृत्यु के बाद उनका पुनरुत्थान हुआ। और उस पुनरुत्थान के बाद ही उनके शिष्यों ने जाना कि वे साक्षात् परमेश्वर थे। बाद में तो फिर उनके नाम का नगाड़ा बजने लगा, उनके नाम का जाप होने लगा और उनके बारे में भाषण होने लगे। वे परमात्मा के अवतरण थे, यह मुख्य बात है। यदि लोग उनके उस स्वरूप को अवतरण को पहचान कर अपनी आत्मोन्नति करें तो चारों तरफ आनन्द ही आनन्द होगा। आप सब लोग परमेश्वर के योग को प्राप्त हों। अनन्त आशीर्वाद।

सहजयोग में आने पर मनुष्य में एकाग्र दृष्टि आती है। ऐसी एकाग्र दृष्टि अगर बढ़ती गई और गणेश शक्ति जागृत हो गई तो उसे 'कटाक्ष-निरीक्षण' कहते हैं। जिस पर आप की दृष्टि जाएगी उसकी कुण्डलिनी जागृत हो जाएगी। जिसकी तरफ आप देखेंगे उसमें पवित्रता आ जाएगी। इतनी पवित्रता आपकी आंखों में आ जाती है। ये केवल श्रीगणेश का ही काम है।

—श्री माताजी

सहजयोग और शारीरिक चिकित्सा—(४)

एक साधारण डाक्टरी (चिकित्सा) शिक्षण के काल में यह बताया जाता है कि यह शरीर विभिन्न अंगों व हड्डियों आदि से मिलकर बना है। अनुसंधान व शिक्षण द्वारा विद्यार्थी को जो जो बातें घटित होती दृष्टिगोचर होती (दीखती) हैं उन बातों का और वह क्यों घटित होती हैं उसका पता चलता है।

यदि कोई आत्म साक्षात्कार प्राप्त योगी है तो वह जानता है इस तथाकथित स्थूल शरीर के नीचे एक सूक्ष्म शरीर और उसके भीतर एक कारण शरीर होता है। हमारे नाड़ी व चक्रों से मिलकर यह सूक्ष्म शरीर बनता है। इनमें से प्रमुख हमें ज्ञात हैं। किन्तु इन प्रमुख नाड़ी व चक्रों के अतिरिक्त कुल ३३ करोड़ और कम ज्ञात नाड़ी व चक्र हैं जो एक दूसरे को प्रत्येक कल्पनीय विधि से जोड़ते हैं जो मानव मस्तिष्क की ग्रहण शक्ति से बाहर है। ये स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण शरीर आत्मा के तन्त्र (व्यवस्था) अथवा यन्त्र (instrument) हैं, जो कि (आत्मा) स्वयं परमात्मा (परम+आत्मा) का प्रतिबिम्ब है, जो कि (परमात्मा) सृष्टि (universe) में सर्वोच्च आविर्भूत (manifest) सत्य (Reality) है और स्वयं परब्रह्म अथवा परम (The Absolute) का प्रतिबिम्ब है।

सूक्ष्म शरीर जो स्थूल शरीर का नियन्त्रण करता है, वह साधन है जिसके द्वारा परम (The Absolute) की इच्छा (आत्म-स्वरूप होने की) इस भौतिक सृष्टि के स्थूल जगत में कार्यान्वित होती है। इन तीन शरीरों का और कोई कार्य नहीं है। परमात्मा का स्थूल शरीर से सम्बन्ध (connection) क्रमशः आत्मा, कारण शरीर, सूक्ष्म शरीर अन्ततः स्थूल शरीर के माध्यम से है। इस तन्त्र के किसी भाग में भी यदि कहीं कोई बाधा या अवरोध है तो उसका व्यक्तित्व (existence, being) परमेश्वर की इच्छा को पूरी तरह नहीं व्यक्त करता।

उपरोक्त तन्त्र (व्यवस्था) के अतिरिक्त, पांच मूलभूत आवरण अथवा कोष होते हैं—पृथ्वी, जल, तेज (अग्नि), वायु और आकाश। इनमें आकाश (Ether) सूक्ष्मतम और क्रमशः पृथ्वी स्थूलतम होते हैं। ये आत्मा अथवा हृदय को घेरे हुए रहते हैं और सूक्ष्म शरीर व तत्पश्चात स्थूल शरीर को स्थिरता प्रदान कर उनको आकार प्रदान करते हैं। इस तन्त्र के विभिन्न अंगों अथवा पहलुओं में से होकर जो ऊर्जा प्रवाहित होती है वह सूक्ष्म स्तर पर चैतन्य लहरियों (vibrations) और स्थूल स्तर पर गतिविधि (activity) के रूप में सृष्टि को प्रभावित करती है अथवा उनका उपयोग सृष्टि को प्रभावित करने के लिये किया जाता है। कारण शरीर पंच महाभूतों के कारणों अथवा तन्मात्राओं को प्रभावित करते हैं। क्योंकि तीनों (शरीर) आत्मा की अभिव्यक्तियां (manifestations) हैं, और इस कारण परमात्मा की इच्छा स्वरूप हैं, ये (तीनों शरीर) अन्त में इसके (आत्मा के) नियन्त्रण में हैं। प्रत्येक मानव एक कोष (cell) की भांति है जो अपने-अपने क्षेत्र में उस परम इच्छा, शक्ति और नियन्त्रण के एक अंश को व्यक्त करता है। जब यह सम्पूर्ण तन्त्र सुचारु होता है तब यह बिना प्रयास और बिना विचार कार्यान्वित होता है। यदि ऐसा नहीं होता (अर्थात तन्त्र बाधाग्रस्त होता

है) तब प्रयास व विचार का आगमन होता है। किन्तु ये (प्रयास व विचार) परम के पूर्णत्व, सरलता, निष्प्रयत्नता और सामीप्य (directness) को कैसे भी नहीं व्यक्त कर सकते।

जब एक साधारण सहजयोगी आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करता है उस समय ये अनेक नालियां, नाड़ी और चक्र अवरुद्ध होते हैं और उनके योग-स्थल जहां क्रिया होती है वे मुड़े-तुड़े होते हैं। इसके अतिरिक्त नाड़ियां जगह-जगह अपने मार्ग से इधर-उधर हो जाती हैं और उनमें एक रस्सी की गांठों की तरह फंदे लग जाते हैं। इससे आत्मा की शक्ति का प्रदर्शन रुक जाता है। श्री शिव को 'शक्तिवाही' भी कहते हैं। इसका अर्थ है कि वे समस्त शक्तियां वहन करते हैं अर्थात समस्त शक्ति-सम्पन्न हैं। अधिक उपयुक्त कथन होगा कि सृष्टि की समस्त शक्तियां परमात्मा की अभिव्यक्तियां हैं जैसे सूर्य की किरणें सूर्य को प्रतिबिम्बित करती हैं और चन्द्रमा की किरणें चन्द्रमा को। इसी भांति आत्मा अपनी शक्तियों के माध्यम से अपने आप को इस तन्त्र (system) में व्यक्त करने का प्रयत्न करता है और अपनी शक्तियों के द्वारा मार्ग के रोधों (अड़चनों) को दूर करता है। कभी-कभी जब अवरोध अत्यन्त गम्भीर (विकट) होता है तब व्यक्ति पीड़ा का अनुभव होता है और कभी-कभी रोगों के द्योतक लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। बहुधा 'रोग ही उपचार होता है', कारण कि भीतर के दोष को यदि ऊपर आने दिया जाय और बाहर निकाल दिया जाय, तो उस व्यक्ति की वह बाधा अथवा बंधन का पूर्ण निवारण हो जाता है।

इस प्रक्रिया की सहायता करने के लिये कुछ उपाय हैं। प्रथम, अपने को दोषी न समझते हुए और सक्षम होने के लिये गर्व अनुभव करते हुए, जो कुछ घटित हो रहा है उसे एक साक्षी की भांति देखते रहना। अच्छा सहजयोगी समझता है कि उसका कुछ अनिष्ट नहीं होगा और जो कुछ पीड़ा और बीमारी है वह हमारे उद्धार प्रक्रिया के अंग हैं जो हमारी कृपालु मां द्वारा प्रदान किये गये हैं और सहर्ष सहन करने चाहिये। यदि कोई सहन नहीं कर सकता तो निवारण कठिन हो जाता है क्योंकि उससे मां परमेश्वरी का हाथ रुक जाता है।

दूसरे, कुछ पदार्थ हैं जिनका विशेष चक्रों व नाड़ियों से साम्य (affinities) है। इनका उपयोग करने अथवा अपने समीप रखने से ये रुग्ण स्थल को अपनी चैतन्य लहरियां (vibrations) प्रदान करते हैं जिनसे उक्त स्थल को बल प्राप्त होता है, अथवा अवरुद्ध नाड़ी का अवरोध बाहर फेंका जाता है। कभी-कभी वे उक्त स्थान पर ऐसा झटका देते हैं कि बाधा उखड़ कर फेंकी जाती है और मार्ग खुल जाता है जिससे कि आत्मा की शक्ति प्रवाहित होने लगती है और उक्त भाग में क्रियान्वित होने लगती है। अधिकांश होमियोपैथी चिकित्सा प्रणाली जो कि पदार्थों के सूक्ष्म अंशों का उपयोग करती है इसी पद्धति से कार्य करती है, क्योंकि उसमें पदार्थों के स्थूल अणु व परमाणु (atom and molecule) को पतला किया जाता (diluted out) है। इस दूसरी विधि के लिये जानकारी व अनुभव की आवश्यकता होती है, किन्तु चैतन्य लहरियां (vibrations) सहायता प्रदान करती हैं।

तीसरे, विभिन्न निष्कासन प्रक्रियाएं। आत्मा की शक्ति के द्वारा जो विकार उभर कर आते हैं वे बाहर फेंके जाते हैं। इन दृश्य प्रक्रियाओं के अतिरिक्त स्नान में उपयोग किये जाने वाले पदार्थ त्वचा व बालों को स्वच्छ करते हैं। सहस्रार के लिये शीकाकाई उपयोगी है जिसका आदिशक्ति श्री सीता ने उपयोग किया था। इसी तरह पस (pus, मवाद) बाधा को बाहर फेंकता है, निःश्वास (breathing out), विशेषकर प्राणायाम में यही कार्य करता है, श्री माता जी के फोटो के सामने दीप की लौ (दीप-

शिखा) की ओर देखना, इत्यादि। इसमें सारे पंच महाभूतों (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश) का उपयोग किया जा सकता है।

चौथी व अन्तिम विधि, जिसकी पहले वर्णित तीनों विधियां सहकारी (adjuncts) हैं, चैतन्य लहरियां ग्रहण करना है। चैतन्य लहरियां परमात्मा की शक्ति की अभिव्यक्ति हैं। श्री माता जी उस शक्ति को साक्षात अवतरण होने के कारण समस्त चैतन्य लहरियों की उद्गम-स्थल हैं। चैतन्य लहरियां उंगलियों और सहस्रार के माध्यम से ग्रहण की जा सकती हैं और बाद में सीधे चक्रों के माध्यम से। जब वे सीधे हृदय के माध्यम से ग्रहण की जानी लगें, तब वे अत्यन्त वेग से प्रभाव डालती हैं, क्योंकि हृदय सृजन (सृष्टि) का बिन्दु है और इसलिये अपने शरीर (सृष्टि) का भी सृजन-स्थल है। यह घटित होने के लिये हृदय श्री माता जी के प्रति पूर्ण उन्मुक्त (समर्पित, open, surrendered) होना आवश्यक है। किन्तु कभी-कभी हृदय की चैतन्य लहरियां भी बाधाग्रस्त हो सकती हैं और ऐसी स्थिति में उपरोक्त विधियां उपयोग में लाई जा सकती हैं।

कभी कभी आधुनिक (ऐलोपैथिक) चिकित्सा प्रणाली, जो एक असन्तुलित विधि है, स्वयं उपचार प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न कर सकती है और उपचार में सहायक होने की बजाय उसमें हानिकारक हो सकती है। इसका कारण है कि उनमें अकेले स्थूल अणु होते हैं और उनका प्रभाव एक स्थान पर सीमित रहता है। जड़ी-बूटियां व नैसर्गिक औषधियां परमात्मा द्वारा निर्मित और मानव की आवश्यकता के अनुसार सन्तुलित की हुई होती हैं। उनमें विभिन्न पदार्थों का विभिन्न अनुपातों में समावेश होता है जो (अनुपात) ऋतुओं और चन्द्रमा की कलाओं के साथ-साथ भी परिवर्तित होते रहते हैं। चन्द्रमा, जिसमें हृदय के गुण विद्यमान होते हैं, विभिन्न जड़ी बूटियों पर शासन करता है और उन पर प्रबल प्रभाव डालता है। अकेली जड़ी बूटी बहुगुणयुक्त होती हैं। यद्यपि शुद्ध चिकित्सा विज्ञान के ज्ञान का स्थान दाहिने पार्श्व में है, किन्तु इसकी शक्ति बांये पार्श्व से आई। इस प्रकार श्री शिव ने ही देव चिकित्सक अश्विनियों को 'सोम' का पान कराया अर्थात् उनको उनकी शक्ति प्रदान की।

उपरोक्त सब कथन केवल साक्षात्कार-प्राप्त आत्माओं के विषय में लागू होते हैं।

—डॉ० रुस्तम

आप लोग मुझे वचन देने आए हैं यहाँ इस International Seminar (अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी) में कि, "माँ जितनी आप मेहनत करती हैं, उसी तरह से हम भी मेहनत करेंगे।"

—श्री माताजी

❋ ❋ ❋

सहजयोगी में ऐसा सामर्थ्य होना चाहिए। अन्य लोगों को अनुभव हो कि वह एक बुद्धिमान व्यक्ति है। उसके लिए यह सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए। आप में प्रेम और क्रियाशीलता दोनों शक्तियों में सन्तुलन आवश्यक है। वह इतना मनोहारी होना चाहिए कि बिना जाने अन्य लोग ऐसे व्यक्ति से प्रभावित हों। सहजयोगी को यह गुण अर्जन करना चाहिए।

—श्री माताजी

卐 जय श्री माता जी 卐

वर्तमान का महत्व

"यहीं और अभी" जो होता,
वर्तमान कहलाता है।
बीत जाता जो कुछ,
भूत बन जाता है ॥१॥

अस्तित्व भूत का किसको,
कौन कहाँ दिखाता है।
मानस-पटल पर जो,
कुछ छाप छोड़ जाता है ॥२॥

पर हर क्षण जीवन,
आगे ही बढ़ता जाता है।
नई-नई अभिव्यक्ति जीवन की,
नित्य-नवीन दिखाता है ॥३॥

जीवन नित्य निरन्तर,
वर्तमान में भासता है।
भूत-भविष्य के चक्र में,
मूरख-मन नाचता है ॥४॥

जो भी दृश्य देखता वह,
क्या व्यक्त उसे कर पाता है।
आत्म-दृष्टि से केवल,
सब कुछ साफ दिखाता है ॥५॥

कहाँ गये सदियों पहले जो,
इस धरती पर आये थे।
बड़े प्रतापी सम्राटों ने कभी,
विजय पताका फहराये थे ॥६॥

कहाँ जायेंगे वे जिन्होंने,
मन्दिर-मस्जिद, गुरुद्वारे बनवाये हैं।
विद्यालय विश्वविद्यालय बनवाये,
धर्मशाले हस्पताल खुलवाये हैं ॥७॥

प्रस्तर-प्रतिमायें स्थापित करवाये,
शिलान्यास करवाये हैं।
मुहल्ले, चौराहे, गार्डन, गली-कूचों के,
जिन्होंने नाम धराये हैं ॥८॥

इतिहास के पन्नों पर जिसने,
धाक अपनी जमाये हैं।
अपनी जीवनगाथा-ग्रन्थों के,
ढेर के ढेर लगवाये हैं ॥९॥

हर प्रचार माध्यम से,
छवि अपनी बनवाये हैं।
मर कर भी अमर होने के,
सपने जिन्होंने सजाये हैं ॥१०॥

वतमान में क्या सीखना,
इतिहास हमें बताता है।
वर्तमान में सीखें तो,
वर्तमान स्वयं सिखाता है ॥११॥

कल के कारण आज जो है,
वर्तमान हमें बताता है।
आज करें सो कल होंगे,
हर कार्य का फल मिल जाता है ॥१२॥

समय के साथ सब ध्वस्त हो जाता,
नामों निशाँ मिट जाता है।
पर वर्तमान को जो पा जाता,
'अमर' वह हो जाता है ॥१३॥

वर्तमान को पाते ही,
इस जग में हम आते हैं।
पड़ कर भूत-भविष्य के चक्कर में,
खाली हाथ चले जाते हैं ॥१४॥

पल पल समय बीत रहा अब,
हाट बन्द हुआ जाता है।
वर्तमान को 'सहज' में पाना,
अवसर निकला जाता है ॥१५॥

सी० एल० पटेल

"सहजयोग का कल्प वृक्ष"

नाश हो जाता पापों का, और मन पावन हो जाता है।
सहजयोग में जो आता, वो सहज प्रभु को पाता है॥ नाश हो जाता

जब-जब भीर पड़ी भक्तों पर, प्रभु ने क्या-क्या रूप लिया।
कभी मीन, कभी वामन, तो कभी नरसिंह अवतार लिया।
संभल अरे नादान संभल रे, कल्कि ने अवतार लिया।
माँ ने सबको चेत कर दिया, अन्तिम निर्णय आता है।
चैतन्य लहरियों को पाता, जो सहजयोग में आता है॥ नाश हो जाता

ठगों की कमी नहीं दुनियां में, बने पड़े भगवान यहाँ।
माँ का नाम सूर्य जैसा है, उन छलियों के बीच यहाँ।
माँ की अमृतवाणी और जो चरणामृत को पाता है।
पार हो जाता भवसागर, धन्य धन्य हो जाता है।
परममोक्ष को पाता है, जो सहजयोग में आता है॥ नाश हो जाता

सहजयोग गहन सागर है, ज्ञान की नहीं है थाह यहाँ।
जितना गहरा इसमें उतरो, उतने मोती पाओ यहाँ।
ऊपर ऊपर रहने वाला, कभी न कुछ भी पाता है।
मानव माँ के मार्ग पे चल के, अति-मानव बन जाता है।
सहजयोग में जो आता, वो कल्प वृक्ष बन जाता है॥ नाश हो जाता

—रतन विश्वकर्मा

त्यौहार

१०-४-८६	चैत्र शुक्ल १	नव वर्ष शालिवाहन नव रात्रि पूजा प्रारम्भ
१८-४-८६	चैत्र शुक्ल नवमी	श्री राम जन्म दिवस
२२-४-८६	चैत्र शुक्ल त्रयोदशी	श्री महावीर जन्म दिवस
२४-४-८६	चैत्र पूर्णिमा	श्री हनुमान जन्म दिवस
५-५-८६	वैसाख कृष्ण द्वादशी	सहस्त्रार दिवस
१४-५-८६	वैसाख शुक्ल पंचमी	श्री आदि शंकराचार्य जन्म दिवस
२३-५-८६	वैसाख पूर्णिमा	श्री बुद्ध जन्म दिवस
२१-७-८६	आषाढ़ पूर्णिमा	श्री गुरू पूजा
१०-८-८६	श्रावण शुक्ल पंचमी	श्री कुण्डलिनी पूजा (नाग पंचमी)
१६-८-८६	श्रावण पूर्णिमा	राखी दिवस
२७-८-८६	श्रावण कृष्ण अष्टमी	श्री कृष्ण जन्म दिवस
७-९-८६	भाद्रपद शुक्ल तृतीया	श्री गणेश जन्म दिवस
११-९-८६	भाद्रपद शुक्ल अष्टमी	श्री गौरी पूजा
४-१०-८६	अश्विन शुक्ल १ प्रतिपदा	नवरात्रि पूजा प्रारम्भ
१०-१०-८६	अश्विन शुक्ल सप्तमी	हवन (नव रात्रि)
१२-१०-८६	अश्विन शुक्ल दशमी	विजय दशमी
१७-१०-८६	अश्विन पूर्णिमा	कोजागिरि पूर्णिमा (श्री लक्ष्मी पूजा)
१-११-८६	अश्विन अमावस्या	श्री लक्ष्मी पूजा (दीपावली)
१६-११-८६	कार्तिक पूर्णिमा	श्री नानक जन्म दिवस
१५-१२-८६	माघ शुक्ल चतुर्दशी	श्री दत्तात्रेय जन्म दिवस
२५-१२-८६	पौष कृष्ण नवमी	श्री जीसस जन्म दिवस

Registered with the Registrar of Newspapers under Regn. No. 36999/

卐 ।। श्री निर्मला दैव्यं नमो नमः ।। 卐

। निर्मल माता कुण्डलिनी माता ।

निर्मल माता, कुंडलिनी माता, आदिशक्ति तू देवता
महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली तू देवता ।। धु० ।।

तू सकलांची निर्मल माता । मान बांची भाग्यविधाती
कुंडलिनी जागृती देऊ नी तू तरी । ब्रह्मरन्ध्र तू छेदिसी
कलियुगी या मानवाला । मोक्ष देतसे तू तरी ।।१।।

कलियुगी या मानवस्वरूपी । जन्म घेतसे असूर तो तरी
देव ऋषी ही पृथ्वी वरती । जन्म घेऊनी राहती
चैतन्यचक्षुनी सहजयोगी ते । पाह तातितेकोण ते ।।२।।

तू हृदयाची पार्वती माता । देव ऋषी ही तुझिया चरणी
गौरी माता, सरस्वती तू । लक्ष्मी माता तू तरी
कलियुगाची कल की माता । तूच मानवा तारिसी ।।३।।

कलियुगाची कल की माता । मानव देही जन्म घेतसे
ऋषी मुनींना ज्ञात होत से । कलकी माता अवतरली
शंख, चक्र, गदा, पद्मते । अवनी वरती येतसे ।।४।।

सहस्त्रा वरती ध्यान धरावे । मानवांना बरे करावे
राधा माता, सीता माता । मेरी माता तू तरी
आत्मस्वरूप तू परमेश्वर तू । महामाया तू तरी ।।५।।

चिरबालक तो गणेश आता । हनुमन्त नी भैरव नाथा
आणिक येसू गण सेवक तो । निर्मल देवी चा असे
विरोधात जे मानव असतो । शिक्षा करिती ते तरी ।।६।।

पूर्वी कधी जे नाही घडले । निर्मले ने करूनी दाविले
अनुभवाने अनुभव देता । ये तो आता मानवा
दिव्या नेच तो दिवा लाग तो । निर्मल देवी नमो नमः ।।७।।

—विष्णु नारायण फडके
(सहजयोग केन्द्र, दादर)

Edited & Published by Sh. S. C. Rai, 43, Bunglow Road, Delhi-110007 and
Printed at Ratnadeep Press, Darya Ganj, New Delhi-110002.
One Issue Rs. 8.00, Annual Subscription Rs. 40.00 ; Foreign [By Airmail £ 12 $ 16]